PRGI-CTHIN/26/A2900

मासिक पत्रिका

दर्शन बालोद

पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ

✦ वर्ष-01 ✦अंक-02 ✦ जून -2026 ✦बालोद से प्रकाशित ✦पृष्ठ-36 ✦ मूल्य-100 रुपये

बालोद
प्रकृति, संस्कृति और आस्था का अद्भुत संगम

योग दिवस विशेषांक

दर्शन बालोद के प्रथम अंक का विमोचन करते आदरणीय स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेंद्र यादव जी

समाचार | सामाजिक सरोकार | शिक्षा | स्वास्थ्य | कृषि | संस्कृति | युवा

हमारा संकल्प – सत्य, निष्पक्ष और जनहित में पत्रकारिता

हिन्दू महासभा मार्ग, नई दिल्ली पंजीकृत कार्यालय
पंक्र. 1720
एक धर्म - एक लक्ष्य - एक सेना
धर्मो रक्षति रक्षितः
हिन्दू सेना
कट जाए शीश पर भगवा न झुके
हिन्दू सेना, जिला बालोद छग.
हेमंत वर्मा
प्रदेश अध्यक्ष
निलेश श्रीवास्तव
प्रदेश महामंत्री
बोधन भट्ट
प्रदेश कोषाध्यक्ष
नंदा पसीने
जिला अध्यक्ष बालोद
हमारी जिला कार्यकारिणी
ममता पटेल
जिला उपाध्यक्ष बालोद
वर्षा दुबे
जिला संगठन मंत्री
ज्योति पटेल
जिला कोषाध्यक्ष
दुर्गा जोशी
जिला सचिव
पद्मिनी साहू
जिला महामंत्री
हिन्दू सेना के नवनियुक्त सभी पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

विजय वैष्णवी
फोटो & फ्रेमिंग स्टूडियो
बाजार चौक जगन्नाथपुर, तहसील बालोद, जिला बालोद, छत्तीसगढ़
हमारी सेवाएं.. इस प्रकार हैं
फोटो शूट
• प्री वेडिंग
• वेडिंग
• बर्थडे
• पोर्ट्रेट आदि
ड्रोन शूट
• 4K ड्रोन कैमरा से शानदार कवरेज
एल्बम डिजाइन
• आकर्षक एवं आधुनिक डिजाइन
फ्रेमिंग कार्य
• फोटो फ्रेम
• वुडन फ्रेम
• कोलाज फ्रेम आदि
फोटो प्रिंटिंग
• हाई क्वालिटी प्रिंट
• सभी साइज में उपलब्ध
अन्य सुविधाएं
पासपोर्ट फोटो
लेमिनेशन
कलर कॉपी
स्कैनिंग
डिजाइनिंग
गिफ्ट आइटम
मग प्रिंट
टी-शर्ट प्रिंट
की-चेन
पजल
फोटो गिफ्ट आदि
प्रोपराइटर
दीपक यादव
मो. 9755235270
NEWS
संबंधित कार्यालय - दर्शन बालोद मासिक पत्रिका, विजय वैष्णवी न्यूज़ एजेंसी
खबर, इश्तहार, विज्ञापन आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

दर्शन बालोद मासिक पत्रिका
पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ

स्वामी एवं प्रकाशक : माधुरी यादव

संपादक

माधुरी यादव

प्रधान संपादक-दीपक यादव

सलाहकार संपादक	तीरथ राज फूटान
डेस्क इंचार्ज -	विद्या यादव
विधिक सलाहकार	अधिवक्ता नीतू सोनवानी

ब्यूरो/ संवाददाता

बालोद -	संतोष कुमार साहू, अरुण साहू चित्ररेखा साहू
दल्लीराजहरा -	गुंजा डेविड(मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव)
जुंगेरा -	लेखराम साहू
भरदाकला (अर्जुंदा)	क्रांति भूषण साहू
रेंगाडबरी (डौंडीलोहारा)	नेमन साहू
डौंडीलोहारा	धर्मेंद्र निषाद
डौंडी	विक्की जायसवाल
खेरथाबाजार(देवरी बंगला)	यशस्वी कटझरे
गुंडरदेही	प्रेम प्रकाश साहू
घोटिया (डौंडी)	शशिकांत निषाद खेमलता सोरी
करहीभदर	दीपक मसीह
निपानी	ईश्वर लाल गजेंद्र
सिकोसा (हल्दी)	रूपचंद जैन
लाटाबोड़	कुलेश्वर प्रसाद आसनिक
गुरुर ब्लॉक	सूर्यकांत साहू,वीरेंद्र साहू
पुरूर (फागुनदाह)	अनिल साहू
डूंडेरा (अर्जुंदा)	छबि लाल कोर्राम
घीना (सुरेगांव)	रूपसिंह रावटे
डंगनिया (अंडा)	संजय कुमार साहू , उदय साहू

स्वामी एवं प्रकाशक माधुरी यादव एवं मुद्रक संदीप तिवारी राज द्वारा छत्तीसगढ़ प्रिंटर्स एन्ड पब्लिशर्स, अनंत विहार कॉलोनी दलदल सिवनी मार्ग मोवा- रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492014 से मुद्रित कर वार्ड क्रमांक-13 जगन्नाथपुर, सांकरा आबादीपारा-बालोद, छत्तीसगढ़ -491226. जिला - बालोद (छ.ग.) से प्रकाशित।

संपादक- माधुरी यादव
*पी.आर.बी.एक्ट के तहत समस्त समाचार/लेखों के चयन के लिए जिम्मेदार
मोबाइल- 9755235270, 7067077434
Email ID darshanbalodnews@gmail.com
*(सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र बालोद होगा)

वर्ष-01 | अंक- 02 | जून-2026

PRGI-CTHIN/26/A2900

3

'पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ': शिक्षा मंत्री के करकमलों से हुआ 'दर्शन बालोद' का विमोचन

4

नास्तिक से योग गुरु तक: बालोद के धीरज शर्मा ने बदली हजारों जिंदगियां...

11. शिक्षा, योग, संस्कार और जनजागरण को जीवन का मिशन ...
13. योग, संस्कार और समाज जागरण का समर्पित चेहरा : विरेंद्र कुमार बघेल
14. योग से बदली जिंदगी: थायराइड पर जीत हासिल कर हजारों ..
15. 'पंच परमेश्वर' की भावना को साकार कर रहे सरपंच नरेंद्र देवांगन...
16. छोटे शहर से बड़े सपनों तक: 1998 से 5000 से अधिक युवाओं ..
17. कई छात्रों ने हासिल की सरकारी व पेशेवर सफलता: ज्ञान गंगा ..
18, 9 बच्चों से शुरू हुआ सफर, आज हजारों सपनों की पहचान ..
20. कबीर आश्रम करहीभदर की प्रेरक कहानी सत्संग, सेवा और...

विशेष सूचना : दर्शन बालोद मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक को घर बैठे प्राप्त करने के लिए हमारी संस्था की सदस्यता जरूर ग्रहण करें। जिसके तहत आपको 1000 प्रति वर्ष अग्रिम शुल्क जमा करना होगा। जिसके एवज में हम आपको हर महीने का अंक आप तक घर पहुंचा कर देंगे और आपकी खबरें भी इसमें प्रमुखता से प्रकाशित की जाएगी। बालोद जिले के अन्य बड़े-बड़े क्षेत्र में भी संवाददाता नियुक्त किए जाने हैं। किसी भी सुझाव और लेख, अपनी कहानी प्रकाशन के लिए हमें 9755235270 पर वाट्स एप या कॉल करें.

सकारात्मक पत्रकारिता की ओर एक कदम – 'दर्शन बालोद' का उद्देश्य

दीपक यादव
दर्शन बालोद
प्रधान संपादक

तेजी से बदलते समय में पत्रकारिता केवल सूचना देने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि समाज को दिशा देने, संवाद बनाने और प्रेरणा जगाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी निभा रही है। आज जब समाचारों की दुनिया में अक्सर विवाद, दुर्घटना, अपराध और नकारात्मक घटनाएं अधिक स्थान घेरती दिखाई देती हैं, ऐसे समय में सकारात्मक सोच और जनसरोकार को केंद्र में रखकर एक नए प्रयास की शुरुआत हुई है— 'दर्शन बालोद'। हमारे राज्य के स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव जी द्वारा विमोचित यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि उस सोच का विस्तार है जो मानती है कि समाज केवल समस्याओं से नहीं, समाधानों से भी पहचाना जाता है। हमारे आसपास ऐसे अनेक लोग, संस्थाएं, शिक्षक, किसान, युवा, कलाकार, समाजसेवी और सामान्य नागरिक हैं जो बिना किसी प्रचार के बदलाव की मिसाल बन रहे हैं। उनके प्रयास भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितनी बड़ी खबरें। 'दर्शन बालोद' का उद्देश्य बालोद जिले की पहचान, संस्कृति, लोकजीवन, शिक्षा, उपलब्धियों और सकारात्मक कहानियों को एक मंच देना है। यह पत्रिका उन चेहरों को सामने लाने का प्रयास करेगी जो समाज में चुपचाप अच्छा काम कर रहे हैं और दूसरों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं। हम मानते हैं कि पत्रकारिता का दायित्व केवल सवाल उठाना नहीं, बल्कि समाज में हो रहे अच्छे कार्यों को पहचान देना भी है। यदि एक अच्छी कहानी किसी युवा को प्रेरित करती है, किसी विद्यार्थी को नई दिशा देती है, किसी गांव के प्रयास को पहचान दिलाती है या किसी सामाजिक पहल को आगे बढ़ाती है— तो पत्रकारिता अपना उद्देश्य पूरा करती है। हमारा प्रयास रहेगा कि शिक्षा, संस्कृति, ग्रामीण विकास, सामाजिक उपलब्धियां, जनहित, नवाचार, प्रेरक व्यक्तित्व और स्थानीय पहचान को प्राथमिकता दी जाए। साथ ही तथ्य, संतुलन और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ पाठकों तक उपयोगी सामग्री पहुंचाई जाए। यह यात्रा केवल हमारी नहीं है। यह उन सभी पाठकों, लेखकों, संवाददाताओं और समाज के सजग नागरिकों की साझा यात्रा है जो मानते हैं कि बदलाव सकारात्मक सोच से शुरू होता है। 'दर्शन बालोद' का प्रत्येक अंक केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि संभालकर रखने योग्य, प्रेरणा देने वाला और संवाद बढ़ाने वाला बनने का प्रयास करेगा। आइए, मिलकर एक ऐसे मंच को मजबूत करें जहां समाचारों के साथ समाज की संवेदनाएं, उपलब्धियां और उम्मीदें भी दर्ज हों।

'पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ': शिक्षा मंत्री के करकमलों से हुआ 'दर्शन बालोद' का विमोचन, सकारात्मक सोच को मिलेगा नया मंच

बालोद की पहचान, संस्कृति और प्रेरक कहानियों को मिलेगी नई आवाज, समाज के अच्छे कार्यों को सामने लाने का संकल्प

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

ऐसे समय में जब समाचारों की दुनिया में अक्सर नकारात्मक घटनाएं अधिक स्थान लेती दिखाई देती हैं, बालोद जिले से=सकारात्मक पत्रकारिता की दिशा में एक नई पहल की शुरुआत हुई है। जिले की नई मासिक पत्रिका 'दर्शन बालोद' का भव्य विमोचन छत्तीसगढ़ शासन के स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव के करकमलों से संपन्न हुआ। विमोचन अवसर पर शिक्षा मंत्री ने पत्रिका के प्रकाशन को पत्रकारिता और सामाजिक सरोकारों की दिशा में एक सार्थक प्रयास बताते हुए शुभकामनाएं दीं और कहा कि ऐसे प्रयास समाज में सकारात्मक वातावरण निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बालोद की संस्कृति, पहचान और उपलब्धियों को मिलेगा मंच

'दर्शन बालोद' मासिक पत्रिका का उद्देश्य केवल समाचार प्रकाशित करना नहीं बल्कि बालोद जिले सहित प्रदेश की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक उपलब्धियों और जनसरोकार से जुड़ी सकारात्मक कहानियों को पाठकों तक पहुंचाना है। विमोचन समारोह में उपस्थित अतिथियों ने पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए इसे समाज की रचनात्मक सोच और जनहित की आवाज बताया।

समाज के अनसुने नायकों को सामने लाने का प्रयास

पत्रिका की संपादक श्रीमती माधुरी दीपक यादव ने कहा कि वर्तमान समय में अधिकांश माध्यमों में दुर्घटना, अपराध, विवाद और नकारात्मक खबरों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है, जबकि समाज में चुपचाप अच्छे कार्य करने वाले लोगों को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाता। उन्होंने कहा कि **'दर्शन बालोद'** केवल पत्रिका नहीं बल्कि बालोद की संस्कृति, विरासत, उपलब्धियों और सकारात्मक सोच का दस्तावेज बनने का प्रयास है। इसका उद्देश्य उन लोगों को मंच देना है जो समाज में बदलाव की मिसाल बन रहे हैं।

पहले अंक से ही सकारात्मक पत्रकारिता की दिशा

संपादक माधुरी यादव ने बताया कि पत्रिका के प्रथम अंक को भी इसी विचार के साथ तैयार किया गया है। इसमें जिले की विशिष्ट पहचान, प्रेरणादायक व्यक्तित्व, सामाजिक उपलब्धियां और सकारात्मक खबरों को प्रमुखता दी गई है।

उन्होंने विश्वास जताया कि पाठकों को पत्रिका के माध्यम से नई ऊर्जा, प्रेरणा और स्थानीय समाज को समझने का नया दृष्टिकोण मिलेगा।

शिक्षा मंत्री ने सोशल मीडिया पर भी साझा की जानकारी

कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने पत्रिका विमोचन की जानकारी और तस्वीरें अपने आधिकारिक सोशल मीडिया मंचों पर भी साझा कीं, जिससे पत्रिका को प्रदेश स्तर पर व्यापक पहचान मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

इनकी रही विशेष उपस्थिति

कार्यक्रम में पत्रिका की संपादक श्रीमती माधुरी दीपक यादव, डेली बालोद न्यूज़ के संपादक दीपक यादव, प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ यादव ठेठवार समाज के प्रदेश महासचिव नरोत्तम यदु, ठेठवार समाज भिलाई नगर के प्रचार मंत्री एवं शिक्षक श्रवण यादव, छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक संघ बालोद के जिला अध्यक्ष तामेश्वर प्रसाद कौशल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पाठकों से जुड़ने की अपील

पत्रिका की ओर से जिले और प्रदेश के पाठकों से वार्षिक सदस्यता लेकर इस सकारात्मक पत्रकारिता अभियान से जुड़ने की अपील की गई है। **अपनी टैगलाइन "पत्रकारिता का नया युग प्रारंभ"** को सार्थक करने की दिशा में आगे बढ़ रही 'दर्शन बालोद' अब जनसरोकार, शिक्षा, संस्कृति, विकास और प्रेरक कहानियों को नई पहचान देने का प्रयास करेगी।

नास्तिक से योग गुरु तक: बालोद के धीरज शर्मा ने बदली हजारों जिंदगियां, बनाया विश्व रिकॉर्ड और चुना सेवा का मार्ग

कभी पिता का व्यवसाय संभालने का सपना था, आज योग, अध्यात्म और सेवा के माध्यम से देशभर में दे रहे स्वस्थ, शांत और आनंदित जीवन का संदेश

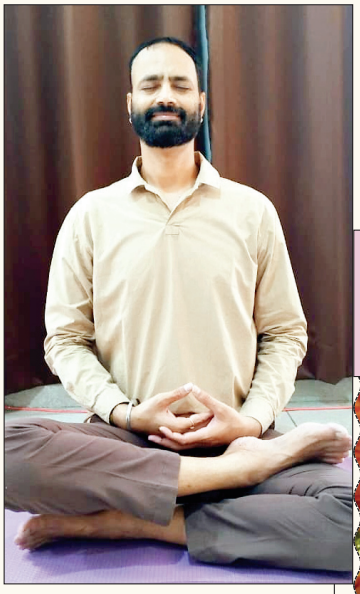

बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

छत्तीसगढ़ के छोटे से शहर बालोद के गंजपारा में 6 अक्टूबर 1981 को जन्मे धीरज शर्मा आज योग जगत में एक ऐसी पहचान बन चुके हैं जिन्होंने अपने जीवन के अनुभव, अनुशासन और सेवा को समाज के लिए समर्पित कर दिया। वर्तमान में वे योग एवं वेलनेस कोच (आयुष मंत्रालय), योगा वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, गुरु ग्रेस योगा एंड वेलनेस स्टूडियो के संस्थापक तथा आर्ट ऑफ लिविंग के वरिष्ठ शिक्षक के रूप में हजारों लोगों को योग, प्राणायाम और सकारात्मक जीवन की दिशा दे रहे हैं। लेकिन उनकी यात्रा की सबसे खास बात यह है कि एक समय ऐसा भी था जब उनका योग, अध्यात्म और गुरु परंपरा से दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं था। वे स्वयं को पूरी तरह नास्तिक मानते थे और सोचते थे कि बड़े होकर पिता की तरह किराया भंडार और टेंट व्यवसाय संभालेंगे।

2008 में बदला जीवन का रास्ता, गुरु से मिलकर मिला नया उद्देश्य-वर्ष 2008 धीरज शर्मा के जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। बालोद में आयोजित हैप्पीनेस प्रोग्राम के माध्यम से वे आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़े। इसी दौरान राजनांदगांव में पहली बार परम पूज्य श्री श्री रविशंकर जी से मुलाकात हुई। यह मुलाकात केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि उनके जीवन का परिवर्तन बिंदु बन गई। उन्होंने तय किया कि अब वे स्वयं योग और सेवा के माध्यम से लोगों के जीवन में खुशी, स्वास्थ्य और प्रेम का संचार करेंगे। लगातार समर्पित सेवा और अभ्यास के बाद वे केवल 17 महीनों में आर्ट ऑफ लिविंग के शिक्षक बने और इसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा।

कोरोना काल में जब लोग घरों में थे, तब मरीजों के बीच पहुंचे धीरज शर्मा-कोरोना महामारी के दौरान जब लोग भय और अनिश्चितता में जी रहे थे, तब धीरज शर्मा ने सेवा का मार्ग चुना। उन्होंने महावीर कोविड सेंटर में लगातार 22 दिनों तक कोरोना संक्रमित मरीजों को ऑफलाइन योग प्रशिक्षण दिया। इस पहल के सकारात्मक परिणाम सामने आए और उनके कार्य को सम्मानित भी किया गया। साथ ही उन्होंने ऑनलाइन माध्यम से देशभर के हजारों लोगों को योग से जोड़कर मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनने में

आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक पूज्य गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी को अपना मेडल दिखाते हुए धीरज शर्मा ,गुरुजी ने कहा - वाह बहुत बढ़िया....

जेल से लेकर जवानों तक, गांव से लेकर शहर तक पहुंचाया योग

वर्ष 2009 से धीरज शर्मा ने पूरे छत्तीसगढ़ सहित विभिन्न स्थानों पर योग, प्राणायाम और सुदर्शन क्रिया का प्रशिक्षण देना शुरू किया। उन्होंने हजारों बच्चों, महिलाओं, युवाओं, ग्रामीणों, स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ-साथ जेलों के कैदियों, बीएसएफ, सीआरपीएफ एवं सीआईएसएफ के जवानों को योग का प्रशिक्षण दिया। उनकी शैली की खास बात यह रही कि उन्होंने योग को कठिन नहीं बल्कि सरल और आनंददायक बनाया।

रोचक, जुम्बा से ध्यान तक लोगों को जोड़ा

धीरज शर्मा ने योग को आधुनिक और सहज रूप देकर लोगों के बीच लोकप्रिय बनाया। वे अपने प्रशिक्षण में जुम्बा, एरोबिक्स, सूर्य नमस्कार, आसन, प्राणायाम, मंत्र जाप, ध्यान, जल नेति, शुद्धिकरण प्रक्रियाएं तथा संगीत आधारित योग को शामिल करते हैं ताकि लोग योग को बोझ नहीं बल्कि आनंद के रूप में अपनाएं। हाल ही में उन्होंने जिला प्रशासन के सहयोग से तीन दिवसीय स्व अवेक नाम से जुम्बा योग महाअभियान का भी सफल आयोजन किया।

जब बनाया विश्व रिकॉर्ड और बालोद का नाम पहुंचाया वैश्विक मंच तक

धीरज शर्मा ने योग को नई ऊंचाई देने का संकल्प लिया और वर्ष 2024 में 1 घंटे में 1641 बार भुजंगासन कर विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया। इसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया और आज उनके नाम दो विश्व रिकॉर्ड दर्ज हैं। उन्हें अब तक— गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, 21 इंस्पायरिंग योगिस 2025 (नेशनल अवॉर्ड), आदियोगी योग भूषण सम्मान 2025, तथा छत्तीसगढ़ योगासन स्पोर्ट्स प्रतियोगिता 2025 में दो सिल्वर मेडल प्राप्त हो चुके हैं। हाल ही में योग शिक्षक महासंघ द्वारा दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में देश के टॉप 21 प्रेरणादायक योग शिक्षकों की उपलब्धियों पर आधारित पुस्तक में भी उनकी यात्रा को स्थान दिया गया।

गुरु ग्रेस योगा एंड वेलनेस स्टूडियो: जहां से शुरू हुई विशुद्ध योग की नई यात्रा

योग को और व्यवस्थित रूप से लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से उन्होंने गुरु ग्रेस योगा एंड वेलनेस स्टूडियो की स्थापना की। वर्ष 2021 में आयुष मंत्रालय के मानकों को पूर्ण कर वे लेवल-3 सर्टिफाइड योग शिक्षक बने। इसके बाद उन्होंने ऋषिकेश, मुंबई और बेंगलुरु में वरिष्ठ योगाचार्यों से उन्नत योग विधाओं का अध्ययन किया।आज उनके स्टूडियो से देश के कई राज्यों के लोग ऑफलाइन और ऑनलाइन योग प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

योग को बनाया पर्यावरण प्रेम और जीवन का लक्ष्य

योग के साथ-साथ धीरज शर्मा पर्यावरण संरक्षण के लिए भी सक्रिय हैं और हर वर्ष सैकड़ों पौधारोपण करते हैं। उनकी सोच है— "प्रकृति ही परमात्मा है।" वे मानते हैं कि मानव जीवन की सबसे बड़ी चुनौती तनाव है और योग तथा सुदर्शन क्रिया व्यक्ति को भीतर से मजबूत बनाती है। धीरज शर्मा कहते हैं— "प्रतिदिन एक घंटा योग के लिए जरूर निकालें। योग केवल स्वास्थ्य नहीं, जीवन को कुशल बनाने की कला है। आज का युवा योग सीखकर इसे आजीविका और समाज सेवा दोनों का माध्यम बना सकता है।" उनका लक्ष्य अब जीवन भर योग, अध्यात्म और सेवा के माध्यम से मानवता को स्वस्थ, शांत और आनंदमय जीवन देना है।

संघर्ष से सेवा तक का सफर: 11 बच्चों के संरक्षक, संस्कृति के साधक और समाज के लिए समर्पित पुरुषोत्तम सिंह राजपूत की अनोखी जीवन यात्रा

गरीबी से उठकर बनाया सेवा का रास्ता, शादी नहीं की... 11 निर्धन बच्चों को दिया परिवार, शिक्षा और भविष्य

जिला प्रशासन बालोद द्वारा मुख्य अतिथि विधायक ललित चंद्राकर द्वारा योग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु योगाचार्य सम्मान

पुरुषोत्तम सिंह राजपूत

बालोद बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

कुछ लोग अपने लिए जीवन जीते हैं, कुछ अपने परिवार के लिए लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपना पूरा जीवन समाज को समर्पित कर देते हैं। बालोद जिले के ग्राम बेलमांड निवासी पुरुषोत्तम सिंह राजपूत ऐसी ही प्रेरणादायक शख्सियत हैं, जिन्होंने संघर्षों से भरे बचपन को सेवा, संस्कार, शिक्षा और मानवता की शक्ति में बदल दिया। आज 56 वर्ष की उम्र में वे केवल एक समाजसेवी या वैद्य नहीं, बल्कि उन बच्चों के लिए पिता समान हैं जिन्हें समाज अक्सर पीछे छोड़ देता है। वे वर्तमान में चार जिलों के 11 निर्धन बच्चों को अपने संरक्षण में लेकर उनके आवास, भोजन, शिक्षा और जीवन निर्माण का दायित्व निभा रहे हैं।

निर्धन परिवार से निकला संघर्ष का योद्धा

20 अप्रैल 1970 को बालोद मुख्यालय से लगभग 9 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम बेलमांड में जन्मे पुरुषोत्तम सिंह राजपूत का बचपन अभावों में बीता। पिता स्वर्गीय अर्जुन सिंह राजपूत मजदूरी, सुपरवाइजरी और सायकल पंचर-मरम्मत कर परिवार चलाते थे, जबकि माता स्वर्गीय गुलाबदेवी राजपूत चना-मुर्रा और चना चरपट्टी बेचकर परिवार का सहारा बनती थीं। गरीबी के बावजूद पढ़ाई जारी रही। पांचवीं में उत्कृष्ट अंक लाकर प्रतिभा दिखाई, लेकिन आगे आर्थिक संकट सामने आया। ऐसे समय समाज के कई लोगों ने उनका हाथ थामा। ग्राम उमरादाह के गुलाबचंद नाहटा ने सातवीं-आठवीं की पढ़ाई में सहयोग दिया। बाद में स्व. मोहनलाल टावरी और स्व. तेजप्रकाश चोपड़ा ने शिक्षा आगे बढ़ाने में सहायता की।

मां के निधन ने बदला जीवन का रास्ता

जीवन का सबसे कठिन दौर तब आया जब वर्ष 1991 में उनकी माता का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। इलाज में सब कुछ समाप्त हो गया। यहां तक कि स्कूल के बच्चों ने अपनी जेब खर्च से पैसे इकट्ठा कर उनकी मदद की थी। घर की जिम्मेदारी, बीमार पिता और पढ़ती हुई बहन के बीच उन्होंने मजदूरी की, सड़क निर्माण में काम किया और फिर दल्लीराजहरा क्षेत्र के कोकान गांव में पेड़ के नीचे बैठकर सायकल और मोटर सायकल मरम्मत का काम शुरू किया।

रोजगार के साथ संस्कृति की अलख

कोकान में रहते हुए उन्होंने 1991 में बाल समाज रामायण मंडली बनाई और बच्चों के साथ लोककला व रामायण आधारित प्रस्तुतियां शुरू कीं। इसके बाद 'माटी के दुलार' लोक संस्था और फिर 'सोनहा अछरा' जैसे सांस्कृतिक प्रयासों से बच्चों को मंच दिया। वर्ष 1996 में बच्चों के साथ भिलाई इस्पात संयंत्र के लोककला महोत्सव तक पहुंचे। रामायण मंचों पर उनकी व्याख्या ने नई पहचान बनाई और वर्ष 2002 में राष्ट्रीय रामायण मेले में मानस गदाधर अलंकरण मिला। इसके बाद- 2003 में राज्य स्तरीय रामायण प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन, राज्य स्तरीय श्रेष्ठ व्याख्याकार सम्मान, 2004 में मानस तुलसीधर अलंकरण, 2006 में मानस वृषकेतु सम्मान जैसे कई सम्मान उनके हिस्से आए।

एक निर्णय जिसने 11 बच्चों का भविष्य बदल दिया

वर्ष 2007 में उन्होंने 'गुरुकृपा बाल संस्कार मानस परिवार' की शुरुआत की। यह केवल संस्था नहीं बल्कि एक परिवार बना। उन्होंने निर्धन बच्चों को अपने साथ रखा, भोजन कराया, कपड़े दिए, पढ़ाया, संगीत सिखाया और आत्मनिर्भर बनाया। आज उनके संरक्षण में पले कई बच्चे उच्च शिक्षा तक पहुंच चुके हैं। उनके संरक्षण में पढ़े मनीषदास मानिकपुरी ने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से तबला विषय में एमए, नेट तथा पीजीडीसीए तक की पढ़ाई पूरी की। उनकी वात्सल्य कुटि में पले बच्चों में एक बेटी

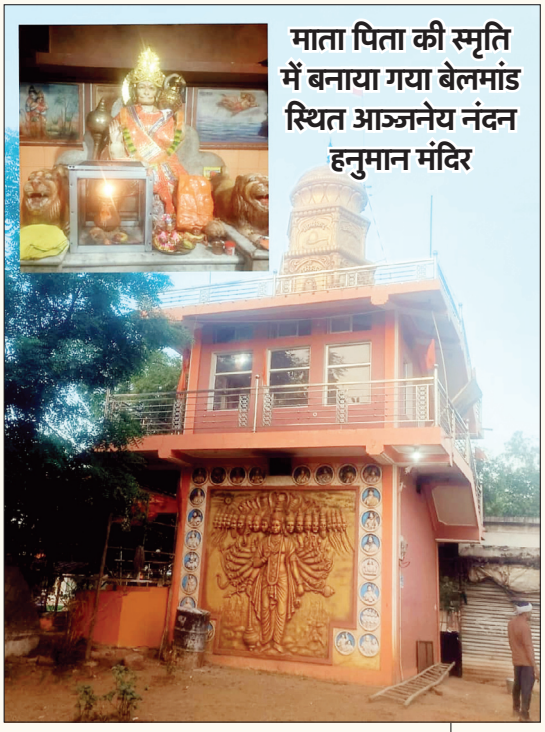

माता पिता की स्मृति में बनाया गया बेलमांड स्थित आञ्जनेय नंदन हनुमान मंदिर

की बालिग होने पर उन्होंने स्वयं उसके विवाह तक की जिम्मेदारी निभाई।

इसीलिए नहीं की शादी

पुरुषोत्तम सिंह राजपूत कहते हैं— "यदि गृहस्थ जीवन में सीमित हो जाता तो शायद इतने बच्चों और समाज के लिए काम नहीं कर पाता।" उन्होंने विवाह नहीं किया और अपना जीवन सेवा, शिक्षा और संस्कार को समर्पित कर दिया।बेलमांड में माता पिता की स्मृति में उन्होंने आञ्जनेय नंदन हनुमान मंदिर भी बनवाया है।

शिक्षा से आयुर्वेद तक का विस्तार

वर्ष 2011 में वे सनातन विद्यालय बालोद के प्रथम प्राचार्य बने। यहां उन्होंने पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों को दोबारा शिक्षा से जोड़ा और उन्हें आयुर्वेद, गोपालन, जैविक कृषि, संगीत और स्वरोजगार से जोड़ा। इसके बाद उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा से आयुर्वेद और होम्योपैथी का अध्ययन किया। उन्होंने स्वामी आत्माराम कुंभज,वैद्यनाथ पांडे,डॉ. प्रशांत झा से मार्गदर्शन लेकर चिकित्सा सेवा शुरू की। 10 दिसंबर 2016 को किसलय होम्यो एवं आयुर्वेद एजेंसी की शुरुआत की।

सम्मानों से ज्यादा सेवा को दिया महत्व

उनके कार्यों को कई मंचों पर सम्मान मिला, जैसे 2017 में परंपरा-गत हर्बल चिकित्सक सम्मान, 2018 में आयुर्वेद सेवा सम्मान,2019 में आयुर्वेद दूत सम्मान, 2019 में संगम तुलसी सम्मान, 2019 में गुरु श्री सम्मान, 2020 में कोरोना वारियर्स सम्मान, 2024 में पंचगव्य सिद्ध डॉक्टर सम्मान, 2024 में गो रक्षा सम्मान,2025 में पंचगव्य कैंसर विशेषज्ञ सम्मान मिला।उन्होंने "पंचगव्य ज्ञान छाया कोश" नामक कृति भी लिखी।

अब अगला सपना— गौशाला, गुरुकुल और कैंसर उपचार केंद्र

वर्तमान में वे गुरुर ब्लॉक के मंगचुआ (हितेकसा) क्षेत्र में गौ संरक्षण कार्य कर रहे हैं। अब उनका लक्ष्य है 125 गायों वाला स्वपोषित गोतीर्थ, 50 बिस्तर का आवासीय संस्कृत गुरुकुल, पंचगव्य आधारित औषधि निर्माण इकाई, जैविक और प्राकृतिक कृषि मॉडल,10 बिस्तर का पंचगव्य आधारित कैंसर उपचार केंद्र बनाना। साथ ही वे अपने घर की छत पर औषधीय पौधों का संरक्षण कर रहे हैं। अब तक 148 औषधीय पौधों का विकास, जिनमें 100 जंगलों में रोपित किए जा चुके हैं।

एक व्यक्ति कई भूमिकाएं

व्याख्याकार, शिक्षक, वैद्य, समाजसेवी, गौसेवक, संस्कार निर्माता और अभिभावक...पुरुषोत्तम सिंह राजपूत की कहानी यह बताती है कि जीवन की सबसे बड़ी पूंजी धन नहीं, बल्कि किसी दूसरे के जीवन में बदलाव लाने की क्षमता होती है। आज उनका जीवन यह संदेश देता है कि "संघर्ष आपको रोकने नहीं, समाज के लिए तैयार करने आते हैं।"

वात्सल्य कुटी बेलमांड,जहां गोद लिए 11 बच्चे रहते हैं।

हाल के वर्षों में मिले सम्मान और वर्तमान दायित्व

हाल के वर्षों में पुरुषोत्तम सिंह राजपूत को विभिन्न राष्ट्रीय और सामाजिक मंचों पर सम्मानित किया गया है। वर्ष 2024 में उन्हें वृंदावन में आयोजित राष्ट्रीय चिकित्सा सम्मेलन में "पंचगव्य सिद्ध डॉक्टर" सम्मान तथा "महर्षि वाग्भट्ट सम्मान" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान ऑल इंडिया पंचगव्य डॉक्टर एसोसिएशन के मंच से प्रदान किया गया। वर्ष 2025 में उन्हें पंचगव्य विद्यापीठ एवं गुरुकुलम कांचीपुरम (तमिलनाडु) द्वारा "पंचगव्य कैंसर विशेषज्ञ सम्मान" प्रदान किया गया। इसके अलावा 2024 में शंकराचार्य जी महाराज के सान्निध्य में गो रक्षा सम्मान से भी सम्मानित किए गए। उनकी लिखित कृति "पंचगव्य ज्ञान छाया कोश" भी चर्चा में रही है। आज वे किसलय होम्यो एवं आयुर्वेद से जुड़े रहकर समाज सेवा, गौ संरक्षण, बाल संस्कार, चिकित्सा परामर्श और आध्यात्मिक जागरूकता के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।जिला प्रशासन बालोद द्वारा मुख्य अतिथि विधायक ललित चंद्राकर द्वारा योग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु योगाचार्य सम्मान दिया गया है। उनकी जीवन यात्रा यह संदेश देती है कि सीमित संसाधन भी बड़े सपनों और समाज के लिए समर्पित सोच के सामने छोटे पड़ जाते हैं।

मिट्टी से उठकर अंतरराष्ट्रीय मंच तक: योग गुरु बालाराम निषाद की प्रेरणादायक यात्रा

गुरुर/बालोद बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

किसी ने सही कहा है कि यदि संकल्प मजबूत हो तो सीमित संसाधन भी सफलता की राह में बाधा नहीं बनते। इस बात को चरितार्थ कर रहे हैं बालोद जिले के गुरुर विकासखंड स्थित ग्राम डढ़ारी के प्रधानपाठक एवं योग

प्रशिक्षक बालाराम निषाद, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम, समर्पण और योग के प्रति जुनून से न केवल स्वयं पहचान बनाई, बल्कि सैकड़ों बच्चों के भविष्य को नई दिशा भी दी ग्रामीण परिवेश से निकलकर योग के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने वाले बालाराम निषाद आज बालोद जिले के लिए प्रेरणा का पर्याय बन चुके हैं। वर्षों से वे बच्चों को योग, खेल और व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण देकर उन्हें राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचा रहे हैं।

बच्चों की सफलता में दिखती है गुरु की तपस्या-बालाराम निषाद के मार्गदर्शन में तैयार खिलाड़ियों ने योग प्रतियोगिताओं में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। उनके प्रशिक्षित खिलाड़ियों ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर जिले का नाम रोशन किया है। इतना ही नहीं, उनके एक शिष्य ने नेपाल की राजधानी काठमांडू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक हासिल कर देश और प्रदेश का गौरव बढ़ाया। आज उनके प्रशिक्षण से निकले कई खिलाड़ी योग ओलंपियाड, राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

योग दिवस पर मिला सम्मान-हाल ही में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर गुरुर में आयोजित कार्यक्रम में बालाराम निषाद के नेतृत्व में बच्चों ने शानदार योग प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों के अनुशासित और आकर्षक प्रदर्शन ने सभी का मन मोह लिया। बच्चों की प्रतिभा और योग के प्रति समर्पण को देखते हुए जनपद पंचायत गुरुर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा खिलाड़ियों को स्पोर्ट्स शूट किट प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान केवल खिलाड़ियों का नहीं, बल्कि उस गुरु के वर्षों के परिश्रम का भी सम्मान था जिसने गांव-गांव में योग की अलख जगाई है।

शिक्षा, संस्कार और व्यक्तित्व निर्माण के शिल्पकार-योग प्रशिक्षण के साथ-साथ बालाराम निषाद शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, खेलकूद, स्काउट-गाइड, रेडक्रॉस, इको क्लब, मार्चपास्ट, व्यक्तित्व विकास और अभिव्यक्ति कौशल जैसे क्षेत्रों में भी बच्चों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनका मानना है कि शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास का माध्यम बननी चाहिए।

सैकड़ों बच्चों को दिलाई नई पहचान-उनके कुशल निर्देशन और प्रेरणा से अब तक 100 से अधिक बच्चे राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में, 50 से अधिक बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर तथा 15 से अधिक बच्चे अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पदक हासिल कर चुके हैं। यह उपलब्धि किसी भी शिक्षक के लिए गर्व का विषय है।

संघर्ष से सफलता तक का संदेश-बालाराम निषाद हमेशा अपने विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। उनका प्रिय संदेश है—₹गिरना नहीं है, गिरकर संभलना ही जिंदगी है, रुकना तो मौत है, चलना ही जिंदगी है।₹ यही विचार उनके जीवन और कार्यशैली में भी दिखाई देता है। सीमित संसाधनों के बीच बच्चों को बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने की प्रेरणा देने वाले बालाराम निषाद आज बालोद जिले में योग, शिक्षा और संस्कार के सच्चे दूत बन चुके हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि एक समर्पित शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं, बल्कि पीढ़ियों का भविष्य गढ़ता है।

खुद संघर्ष किया, अब दूसरों के जीवन में रोशनी जगा रहे शिक्षक कमलकांत साहू

दिव्यांग होकर भी नहीं मानी हार... शिक्षा, योग और सेवा से बदल रहे सैकड़ों लोगों का जीवन

बालोद/डौंडीलोहारा बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

जीवन में आने वाली चुनौतियां कई लोगों को रोक देती हैं, लेकिन कुछ लोग उन्हीं चुनौतियों को अपनी ताकत बना लेते हैं। बालोद जिले के ग्राम चिल्हाटी कला निवासी शिक्षक कमलकांत साहू ऐसी ही प्रेरक शख्सियत हैं, जिन्होंने स्वयं कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए न केवल अपनी पहचान बनाई बल्कि अब शिक्षा, योग और सामाजिक सेवा के माध्यम से सैकड़ों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। कमलकांत साहू वर्तमान में शासकीय प्राथमिक शाला बड़गांव में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। स्वयं दिव्यांग होने के बावजूद उन्होंने कभी परिस्थितियों को अपनी मंजिल के बीच नहीं आने दिया। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि मजबूत इच्छाशक्ति हर कठिनाई से बड़ी होती है।

बचपन की चुनौती बनी जीवन की ताकत

परिवार के अनुसार कमलकांत साहू जन्म से दिव्यांग नहीं थे। लगभग 9 माह की उम्र में उपचार के दौरान एक चिकित्सकीय त्रुटि के कारण उनके पैर पर प्रभाव पड़ा। परिवार ने कई स्थानों पर इलाज कराया, जिसके बाद वे

चलने योग्य हो पाए। जीवन में दो बार दुर्घटनाओं और पैर के दो ऑपरेशन जैसी कठिन परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और लगातार आगे बढ़ते रहे।

योग को बनाया जनसेवा का माध्यम

कमलकांत साहू लंबे समय से योग के माध्यम से समाज सेवा कर रहे हैं। वे पतंजलि योग समिति जिला बालोद से जुड़े हुए हैं और वर्तमान में मीडिया प्रभारी के रूप में सक्रिय हैं। कोरोना काल में जब लोग स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे थे, तब उन्होंने 17 मई 2021 से ऑनलाइन योग क्लास की शुरुआत की, जो आज भी नियमित रूप से जारी है। सुबह 5:15 बजे से 6:45 बजे तक संचालित इस योग अभियान से लगभग 700 से अधिक लोग जुड़ चुके हैं और घर बैठे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर

शिक्षा में निरंतर उत्कृष्टता

ग्राम चिल्हाटी कला में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई पूरी की और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा हासिल किया। इसके बाद ऑर्डनेंस फैक्ट्री जबलपुर से चार्जमैन प्रशिक्षण लिया तथा लगभग चार वर्षों तक अल्ट्राटेक लैबोरेट्री कुम्हारी में जूनियर साइंटिस्ट के रूप में कार्य किया। वर्ष 2008 में शिक्षा कर्मी वर्ग-3 पद पर चयन होने के बाद उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में सेवा शुरू की। नौकरी के साथ-साथ उन्होंने अपनी योग्यता लगातार बढ़ाई और एमएससी, डीएड, बीएड जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त की। वर्तमान में भी वे अध्ययन और स्वयं के विकास की प्रक्रिया जारी रखे हुए हैं।

रहे हैं।इसके अलावा गंगा मैया प्रांगण बालोद, लोहारा मंडी प्रांगण, दल्ली राजहरा, बघमरा एवं कोरगुड़ा सहित विभिन्न स्थानों पर योग शिविर आयोजित कर लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया।

पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों को फिर से दी नई दिशा

कमलकांत साहू की सबसे बड़ी पहचान उन विद्यार्थियों के लिए किए जा रहे कार्यों से बनी, जो किसी कारणवश पढ़ाई छोड़ चुके थे या परीक्षा में असफल होने के बाद निराश हो गए थे। पिछले 9 वर्षों से वे ऐसे बच्चों को ओपन परीक्षा के लिए निःशुल्क मार्गदर्शन, फॉर्म भरने और परीक्षा की तैयारी में सहयोग कर रहे हैं। कई जरूरतमंद विद्यार्थियों की परीक्षा फीस भी स्वयं जमा करते हैं। अब तक वे 150 से अधिक विद्यार्थियों को दोबारा शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ चुके हैं। उनका मानना है—"असफलता अंत नहीं होती, सही मार्गदर्शन मिले तो वही बच्चा आगे चलकर सफलता की मिसाल बन सकता है।"

स्वास्थ्य और जीवनशैली पर भी देते हैं जागरूकता

कमलकांत साहू लोगों को संतुलित आहार, योग, नियमित दिनचर्या, पर्याप्त नींद और मोबाइल के सीमित उपयोग का संदेश देते हैं। वे विशेष रूप से बच्चों को जंक फूड और अत्यधिक स्क्रीन टाइम से बचने की सलाह देते हैं। वे मोटे अनाज, नियंत्रित भोजन और योग को स्वस्थ जीवन का आधार मानते हैं।

सेवा ही सबसे बड़ी सफलता

कमलकांत साहू का मानना है कि जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं आगे बढ़ना नहीं, बल्कि दूसरों को भी आगे बढ़ाना होना चाहिए। उनकी यात्रा यह बताती है कि शारीरिक सीमाएं कभी भी किसी व्यक्ति की क्षमता तय नहीं करतीं। एक शिक्षक केवल कक्षा नहीं बदलता— वह पूरी पीढ़ी बदल सकता है।

परिवार से मिली सेवा और संस्कार की प्रेरणा

कमलकांत साहू पांच बहनों और दो भाइयों वाले परिवार में सबसे छोटे हैं। परिवार के कई सदस्य योग और सामाजिक सेवा से जुड़े हैं। उनकी भतीजी पूर्णा साहू योग शिक्षा के माध्यम से देश-विदेश के लोगों को लाभ पहुंचा रही हैं। बड़े भाई भी योगाचार्य के रूप में लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर रहे हैं।

समाजसेवी बेनुराम साहू ने डोंगरगढ़ में दर्शनार्थियों के लिए वाटर कूलर किया समर्पित

डोंगरगढ़। समाज सेवा केवल घोषणा नहीं, बल्कि लोगों की जरूरतों को समझकर किया गया कार्य होती है। इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए बालोद जिले के ग्राम नर्रा निवासी, वर्तमान में भिलाई 3 पदुमनगर में निवासरत समाजसेवी बेनुराम साहू ने एक बार फिर जनसेवा की दिशा में प्रेरक पहल करते हुए डोंगरगढ़ आने वाले श्रद्धालुओं और दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु कबीर मंदिर के पास वाटर कूलर सादर समर्पित किया। यह पहल विशेष रूप से गर्मी और यात्रा के दौरान आने वाले हजारों श्रद्धालुओं को स्वच्छ एवं शीतल पेयजल उपलब्ध कराने

के उद्देश्य से की गई है। ज्ञात हो कि रेलवे में सीनियर पैसेंजर ट्रेन मैनेजर के पद पर कार्यरत समाजसेवी बेनुराम साहू अपनी ड्यूटी निभाने के साथ-साथ लंबे समय से सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। पूर्व में भी वे जनसुविधा, सामाजिक सहयोग और सेवा आधारित गतिविधियों के माध्यम से लोगों के बीच अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। डोंगरगढ़ धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। ऐसे में कबीर मंदिर के समीप स्थापित वाटर कूलर यात्रियों और दर्शनार्थियों को पेयजल सुविधा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। लोगों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि समाज में ऐसे कार्य सेवा, संवेदना और जनभागीदारी की भावना को मजबूत करते हैं। वर्तमान में बेनू राम साहू द्वारा पांच अलग अलग जगह पीने के लिए पानी की व्यवस्था किए हुए हैं। गंगा मैया मंदिर झलमला तथा रानी माई मंदिर में वाटर कूलर, सिरसा गेट चौक भिलाई 3 तथा रेलमगर चौक चरोदा में अस्थाई प्याऊ के माध्यम से, और अब डोंगरगढ़ में वाटर कूलर के माध्यम से प्यासे राहगीरों को पानी पिलाने का प्रयास कर रहे हैं। यह पहल केवल एक वाटर कूलर की स्थापना नहीं, बल्कि सेवा, सहयोग और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना का संदेश भी है।

सुबह 4 बजे शंख बजाकर जगाते हैं गांव, दिन में पढ़ाते हैं बच्चे और सालभर सिखाते हैं योग – शिक्षक पीलू राम साहू बने बदलाव की मिसाल

शिक्षा, योग, संस्कार और जनजागरण को जीवन का मिशन बनाकर 16 वर्षों से गांव-गांव पहुंचा रहे स्वास्थ्य और चेतना

डोंडीलोहारा बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

शिक्षक यदि संकल्प ले तो वह केवल विद्यार्थियों का भविष्य नहीं, पूरे समाज की दिशा बदल सकता है। विकासखंड डौण्डीलोहारा के ग्राम सिरपुर (बगईकोन्हा) निवासी और शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बड़गाँव में पदस्थ शिक्षक पीलू राम साहू ऐसे ही प्रेरक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने शिक्षा को किताबों तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे योग, संस्कार, स्वच्छता, अनुशासन और सामाजिक चेतना से जोड़कर जीवन का मिशन बना लिया।मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण ज्ञानदीप पुरस्कार 2022 से सम्मानित पीलू राम साहू आज जिले में एक शिक्षक, योगाचार्य और समाज प्रेरक के रूप में पहचान बना चुके हैं।

शिक्षक बनने का सफर और समाज सेवा का संकल्प

12 अगस्त 1980 को जन्मे पीलू राम साहू, स्वर्गीय गोकुल राम साहू के सुपुत्र हैं। उनका निवास ग्राम सिरपुर (बगईकोन्हा), डौण्डीलोहारा, जिला बालोद में है।उन्होंने बी.ए., एम.ए. (संस्कृत) और डी.एड. की शिक्षा प्राप्त कर शिक्षकीय सेवा को अपना उद्देश्य बनाया। उनकी पहली नियुक्ति 26 अगस्त 2002 को संविदा शिक्षक वर्ग-03 के रूप में हुई। इसके बाद शिक्षाकर्मी, शिक्षक पंचायत और संविलियन की प्रक्रिया से आगे बढ़ते हुए वर्तमान में वे शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बड़गाँव में शिक्षक (एल.बी.) के रूप में सेवाएं दे रहे हैं।

पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से आज तक लगातार निभा रहे जिम्मेदारी

पीलू राम साहू बताते हैं कि 21 जून 2015

16 साल से एक ही मिशन— 'हर घर योग, हर जीवन निरोग'

पीलू राम साहू पिछले 16 वर्षों से निशुल्क योग प्रशिक्षण दे रहे हैं। अब तक वे 11 हजार से अधिक लोगों को योग, प्राणायाम और स्वस्थ जीवनशैली से जोड़ चुके हैं।वे गांव-गांव जाकर योग प्रशिक्षण देते हैं और उनके शिविर केवल एक दिन के नहीं बल्कि एक सप्ताह, 15 दिन और एक महीने तक निरंतर चलते हैं। योग की शिक्षा के लिए उन्होंने सबसे पहले पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके बाद उन्हें अखिल विश्व गायत्री परिवार, छत्तीसगढ़ योग आयोग रायपुर तथा स्कूल शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ से भी योग प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिला।

सुबह 4 बजे निकलती है प्रभातफेरी, गांव को जगाने का अनोखा अभियान

उनकी सबसे अनोखी पहल वर्ष 2008 से लगातार चल रही प्रभातफेरी है। प्रतिदिन सुबह 4 बजे शंख और ढफली के साथ ग्राम सिरपुर (बगई-कोन्हा) में प्रभातफेरी निकाली जाती है। इस अभियान में कुकुरदेव की प्रेरणा, ग्रामवासियों का सहयोग और आशीर्वाद जुड़ा हुआ है। जब वे सुबह शंख बजाते हैं तो उनका साथ देने के लिए प्रति दिन गली के श्वान उनके साथ इकट्ठा होकर अपनी भागीदारी दिखाते हैं। यह दृश्य हर किसी को हैरत कर देता है। सिरपुर में रोजाना वे शंख बजाकर प्रभातफेरी निकालते हैं जिसका उद्देश्य लोगों को जल्दी उठने, योग अपनाने, सकारात्मक सोच और अनुशासित जीवन की ओर प्रेरित करना है।

तत्कालीन कलेक्टर कुलदीप शर्मा ने उत्कृष्ट कार्यों के लिए पीलूराम साहू को सम्मानित किया था।

को पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से लेकर आज तक उन्हें विकासखंड स्तर पर योग प्रशिक्षण कराने का सौभाग्य लगातार प्राप्त हो रहा है। योग को उन्होंने केवल अभ्यास नहीं बल्कि जीवनशैली के रूप में समाज तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

विद्यालय में शिक्षा के साथ संस्कार और जीवन कौशल

विद्यालय में पीलू राम साहू केवल विषय पढ़ाने तक सीमित नहीं रहते। वे बच्चों को नियमित योग, नैतिक शिक्षा, अनुशासन, स्वच्छता और सामाजिक जिम्मेदारी की सीख देते हैं। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देकर उन्होंने अनेक बच्चों को ब्लॉक, जिला और राज्य स्तर तक पहुंचाया है। अपने पढाए शिष्यों के साथ सन् 2024-25 से श्री गणेश मानस मंडली बनाकर राम नाम का प्रचार-प्रसार व युवा जागरण कर रहे। सन् 2019 में ग्राम के तालाब के पार में 16000 खर्च कर हरित सरोवर बनाने 25 पेड़ लगाया गया। जिसमें ग्रामवासियों का भी सहयोग रहा। अपने जन्मदिन पर विद्यालय के बच्चों को थाली भेंट कर विद्यालय आने प्रेरित किया गया। उन्होंने सन् 2020में योग शिक्षा में डिप्लोमा कोर्स भी किया है।

कोरोना काल में भी नहीं रुकी सेवा

कोविड महामारी के दौरान जब स्कूल और सामान्य जीवन प्रभावित थे, तब उन्होंने ऑनलाइन योग शिक्षा कार्यक्रम संचालित कर बच्चों और नागरिकों को स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा से जोड़े रखा।

शिक्षक नहीं, जीवन निर्माण की पाठशाला

पीलू राम साहू का मानना है—"विद्यालय केवल पढ़ाई का केंद्र नहीं, बल्कि अच्छे नागरिक और संस्कारित समाज निर्माण की प्रयोगशाला है। योग, शिक्षा और संस्कार साथ चलें तो समाज अपने आप बदल जाता है।" आज पीलू राम साहू की यात्रा यह संदेश दे रही है कि बदलाव बड़े मंच से नहीं, गांव के स्कूल और समाज की छोटी शुरुआत से भी संभव है।

रोज सुबह जब वे शंख बजाकर गांव को जगाते हैं स्वान भी उनका साथ देते हैं

योग, संस्कार और समाज जागरण का समर्पित चेहरा : विरेंद्र कुमार बघेल

बालोद बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के विशेष अवसर पर ऐसे व्यक्तित्वों को सामने लाना आवश्यक है जिन्होंने योग को केवल एक दिवस का कार्यक्रम नहीं बल्कि जीवन जीने की पद्धति बनाया। विकासखंड डौंडीलोहारा के वनांचल क्षेत्र के ग्राम कमकापार में 10 जून 1991 को जन्मे विरेंद्र कुमार बघेल आज शिक्षा, योग, सामाजिक जागरूकता और संस्कार आधारित जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार का प्रेरक उदाहरण बन चुके हैं। वर्तमान में वे प्रशिक्षण अधिकारी, शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था दल्लीराजहरा के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं तथा साथ ही गायत्री परिवार विकासखंड डौंडीलोहारा के युवा प्रकोष्ठ प्रभारी के रूप में सामाजिक दायित्वों का सक्रिय निर्वहन कर रहे हैं।

गांव की शिक्षा से सेवा के संकल्प तक का सफर-विरेंद्र कुमार बघेल ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कक्षा पहली से दसवीं तक ग्राम कमकापार में प्राप्त की। इसके बाद उच्च माध्यमिक शिक्षा, महाविद्यालय और आईटीआई की पढ़ाई बालोद में पूर्ण की। शिक्षा के साथ सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक मूल्यों की ओर उनका रुझान लगातार बढ़ता गया। 25 जून 2006 को गायत्री परिवार से गुरु दीक्षा लेकर उन्होंने सेवा और संस्कार के मार्ग को जीवन का उद्देश्य बनाया। वर्ष 2011-12 में गायत्री शक्तिपीठ बालोद में एक वर्ष परिव्राजक कार्य करते हुए समयदान दिया तथा अगस्त 2014 से मई 2022 तक गायत्री शक्तिपीठ डौंडीलोहारा में परिव्राजक के रूप में सतत सेवा कार्य करते रहे।

वनांचल के कमकापार से समाज चेतना तक: योग, शिक्षा और संस्कार के माध्यम से बना प्रेरणा का सफर

शिक्षक नहीं, जीवन निर्माण के प्रशिक्षक-फरवरी 2019 से सितंबर 2023 तक उन्होंने शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था डौंडीलोहारा में प्रशिक्षण अधिकारी के दायित्व के विरुद्ध मेहमान प्रवक्ता के रूप में कार्य किया। इसके बाद अक्टूबर 2023 से शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था दल्लीराजहरा में प्रशिक्षण अधिकारी के रूप में नियुक्त होकर युवाओं के कौशल और व्यक्तित्व निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

योग को बनाया जनजागरण का माध्यम-योग दिवस के संदर्भ में विरेंद्र कुमार बघेल का मानना है कि योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का माध्यम नहीं बल्कि विचार, व्यवहार और जीवन को संतुलित करने की साधना है। वे निरंतर लोगों को योग, ध्यान, प्राकृतिक जीवनशैली और आयुर्वेद के प्रति जागरूक कर रहे हैं ताकि समाज स्वस्थ और संस्कारित बन सके।

समाज निर्माण के छह प्रमुख आयाम

साधना: लोगों को अनुशासित और साधनात्मक जीवन के लिए प्रेरित करना।

शिक्षा: गांवों में बाल संस्कारशाला तथा व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविरों में प्रशिक्षक के रूप में सक्रिय भूमिका।

स्वास्थ्य: योग, ध्यान और आयुर्वेद आधारित जीवनशैली के प्रति जनजागरण।

पर्यावरण संरक्षण: युवाओं और समाज में पर्यावरण संवर्धन के लिए अभियान।

व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन: व्यसन मुक्ति रैली और आदर्श होली जैसे सामाजिक अभियानों का संचालन।

संस्कार परंपरा जागरण: पुंसवन, नामकरण, मुंडन, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, विवाह, अंत्येष्टि एवं श्रद्धा तर्पण जैसे वैदिक संस्कारों के माध्यम से समाज को भारतीय संस्कृति से जोड़ना।

विचारों से परिवर्तन की दिशा

वर्तमान में विकासखंड डौंडीलोहारा गायत्री परिवार के प्रभारी के रूप में वे गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य, वैदिक ज्ञान और सकारात्मक जीवन मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं।अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर उनका संदेश स्पष्ट है— "योग को केवल अभ्यास नहीं, जीवन का संस्कार बनाइए; स्वस्थ शरीर, सकारात्मक विचार और संस्कारित समाज ही सशक्त भारत की पहचान है।"

योग से बदली जिंदगी: थायराइड पर जीत हासिल कर हजारों लोगों को निरोगी जीवन का संदेश दे रही हैं मधुमाला कौशल

गुंडरदेही/सिकोसा बालोद ✍दर्शन बालोद ✍

स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय सिकोसा की प्राचार्य, राज्यपाल पुरस्कृत शिक्षिका एवं योग प्रशिक्षक मधुमाला कौशल आज जिले में शिक्षा, योग, समाज सेवा और व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में प्रेरणा बन चुकी हैं। तीन बार राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित मधुमाला कौशल ने अपने जीवन के कठिन दौर को योग की शक्ति से बदला और अब हजारों लोगों तक स्वास्थ्य और जागरूकता का संदेश पहुंचा रही हैं।

थायराइड से संघर्ष और योग से नई शुरुआत

मधुमाला कौशल का जन्म 1 फरवरी 1970 को हुआ। वर्ष 2008-09 के दौरान उन्हें थायराइड की गंभीर समस्या हो गई थी। उस समय वह एक महत्वपूर्ण अवसर के लिए भोपाल में सांख्यिकी अधिकारी पद के इंटरव्यू की तैयारी कर रही थीं। अचानक उनकी आवाज बंद होने लगी और स्थिति गंभीर हो गई। उन्होंने दुर्ग के एक चिकित्सक से परामर्श लिया, जहां उन्हें बताया गया कि जल्द उपचार की आवश्यकता है तीन दिन के भीतर सर्जरी करनी पड़ेगी। इसी दौरान उनके जीवन में एक नया मोड़ आया।

हरिद्वार में योग प्रशिक्षण ने बदली दिशा

उसी समय शिक्षकों के लिए हरिद्वार में योग प्रशिक्षण का अवसर मिला और वर्ष 2009 में बाबा रामदेव के सानिध्य एवं आशीर्वाद में योग प्रशिक्षण लेने का मौका मिला। प्रशिक्षण से लौटने के बाद उन्होंने करीब 9 महीने तक लगातार योग अभ्यास किया और अपने स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव महसूस किए। इसके बाद उन्होंने तय किया कि योग के लाभ केवल अपने तक सीमित नहीं रखेंगी बल्कि समाज तक पहुंचाएंगी।

15 वर्षों से निशुल्क योग सेवा, गांव-गांव पहुंचा अभियान

मधुमाला कौशल पिछले लगभग 15 वर्षों से लगातार निशुल्क योग कक्षाएं संचालित कर रही हैं। उन्होंने गुंडरदेही विकासखंड के गांव-गांव जाकर लोगों को योग के प्रति जागरूक किया। कोरोना काल में भी उन्होंने सेवा कार्य नहीं रोका। प्रतिदिन सुबह 7 बजे से 8 बजे तक ऑनलाइन योग सत्र चलाए और साथ ही मास्क वितरण, जरूरतमंदों तक राशन पहुंचाने सहित कई सामाजिक कार्य किए।

शिक्षा, स्काउट-गाइड और रेडक्रॉस में भी बनाया विशेष स्थान

मधुमाला कौशल बालोद जिले की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल हैं जिन्हें राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें अब तक विभिन्न क्षेत्रों में तीन बार राज्यपाल अलंकरण प्राप्त हो चुका है— 2016 – स्कूल शिक्षा विभाग, 2022 –

रेडक्रॉस विभाग, स्काउट-गाइड क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ गाइडर सम्मान मिले हैं। स्काउटिंग क्षेत्र में उन्हें एशिया पैसिफिक स्तर का प्रतिष्ठित सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। उनके मार्गदर्शन में लगभग 30 विद्यार्थी भी राज्यपाल अलंकृत हो चुके हैं तथा कई विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

योग से तैयार हुए नए प्रशिक्षक

मधुमाला कौशल के प्रशिक्षण से जुड़े कई विद्यार्थी आज योग को अपने करियर के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। उनके अनुसार शरीर हार्डवेयर है और योग उसका सॉफ्टवेयर है, जो भीतर से व्यक्ति को मजबूत करता है। उनके मार्गदर्शन से प्रशिक्षित कई विद्यार्थियों ने विभिन्न क्षेत्रों में पहचान बनाई। योग के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य, अनुशासन और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा मिली।

युवाओं को संदेश: योग को उम्र से मत जोड़िए

मधुमाला कौशल का कहना है कि "यह मत सोचिए कि बूढ़े होने पर योग करेंगे। यदि आज से योग अपनाएंगे तो भविष्य में निरोगी जीवन जी सकेंगे। असली धनवान वही है जो रोगमुक्त हो।" उन्होंने युवाओं से नशामुक्त जीवन, अच्छे संस्कार और नियमित योग को अपनाने की अपील की। आज मधुमाला कौशल शिक्षा, योग, समाज सेवा और महिला सशक्तिकरण के माध्यम से हजारों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

'पंच परमेश्वर' की भावना को साकार कर रहे सरपंच नरेंद्र देवांगन, आश्रित गांव से बनकर विकास का नया अध्याय लिख रहे

बालोद/अर्जुंदा ✍दर्शन बालोद✍

पंचायत व्यवस्था में अक्सर यह कहा जाता है कि "पंच परमेश्वर" यानी जनप्रतिनिधि केवल पद नहीं बल्कि जनता की अपेक्षाओं और विकास की जिम्मेदारी का प्रतीक होता है। इसी भावना को जमीन पर उतारने का प्रयास कर रहे हैं परना ग्राम पंचायत के सरपंच नरेंद्र देवांगन, जो अपने कार्यों और सक्रियता के कारण क्षेत्र में चर्चा का विषय बने हुए हैं। विशेष बात यह है कि इतिहास में पहली बार आश्रित ग्राम परसवानी से कोई व्यक्ति सरपंच निर्वाचित हुआ है। इस उपलब्धि को ग्रामीण केवल राजनीतिक बदलाव नहीं बल्कि प्रतिनिधित्व और विश्वास की नई शुरुआत के रूप में देख रहे हैं।ग्रामीणों के अनुसार वे पंचायत की मूलभूत आवश्यक-ताओं, जनसुविधाओं और विकास कार्यों को लेकर लगातार सक्रिय रहते हैं तथा लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर दिखाई देते हैं। सरपंच नरेंद्र देवांगन का प्रयास है कि शासन की योजनाएं केवल कागजों तक सीमित न रहें बल्कि उनका वास्तविक लाभ आम नागरिकों तक पहुंचे। चाहे ग्रामीण विकास हो, मूलभूत सुविधाएं हों या जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी— वे लोगों को जोड़ने और पात्र हितग्राहियों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत बताए जाते हैं।

सरपंच बनने के बाद नरेंद्र देवांगन ने पंचायत स्तर पर संवाद, सहभागिता और विकास की सोच को प्राथमिकता दी है। उनका मानना है कि पंचायत केवल प्रशासनिक इकाई नहीं बल्कि गांव की सामूहिक प्रगति का केंद्र है और यदि जनप्रतिनिधि ईमानदारी से काम करें तो गांव का स्वरूप बदला जा सकता है। आज परना पंचायत में उनके कार्यों को कई लोग

"पंच परमेश्वर" की भावना के अनुरूप सेवा और विकास का प्रयास मान रहे हैं।

ये हैं उनके उल्लेखनीय कार्य

अपने ग्राम परसवानी में 450 पौधारोपण करवाया गया है। जो आज भी सुरक्षित हैं। अभी तक इस गांव में पौधारोपण नहीं हुआ था। वहीं परसवानी से परसतराई जाने वाला मार्ग जो आज तक पक्की नहीं हो पाया है, जिसे चलने लायक बनाने लगभग 100 ट्रिप मुरूम डलवाने का काम भी सरपंच नरेंद्र के प्रयासों से सफल हुआ। आज पक्की सड़क नहीं होने के बावजूद ग्रामीण इस मार्ग से आसानी से आ जा सकते हैं। स्वयं की गली जो कीचड़ और दलदल से भरी होती थी वहां भी मुरूम डलवा कर उन्होंने रास्ता दुरुस्त किया है तो वहीं दिवाली के बाद विभिन्न वार्डों में सीसी रोड निर्माण, मुक्तिधाम में शेड निर्माण भी प्रस्तावित है। तालाब गहरीकरण भी कराया,सैकड़ो ग्रामीणों को रोजगार मिला। मूलभूत सुविधाओं के कार्य करवाने में भी श्री देवांगन तत्पर रहते हैं।

किसलय होम्यो एवं आयुर्वेद एजेन्सी
संस्कार शाला के बाजू दल्ली रोड, बालोद
मो. 9406066193, 8435464139
होम्योपैथी एवं आयुर्वेदिक विश्व स्तरीय दवाओं का
विशाल संग्रह एक ही छत की नीचे...
होम्योपैथी : एम. भट्टाचार्य मेडिसिन्स, एडविन, वैक्सन, एस . बी.एल., एस.एस.बी.पी.एच.एल. भार्गव हीलवेल, शारदा, एलेन, न्यूलाईफ, रेडियेन्ट, हेप्ड़को, हेनिमेन, रेमेडीज, आर.ई.पी.एल. श्वाबे, नाइस डॉ. रेक्वेग आदि विश्वस्तरीय होम्योपैथिक दवाईयां।
आयुर्वेद की श्रृंखला : गीता, फार्मेसी, आयुर्वेद सेवा सदन, औरा, ऊँझा, डाबर, शर्मायु, एट्रीमेड, धनवन्तरी, श्री धनवन्तरी, अंजनी-फार्मा, जमना फर्मा, धुतपापेश्वर, अष्टावक्र , तनसुख फार्मा धनवन्तरी, हर्बस, बिट्ठल फार्मेसी, महर्षि बद्री, दीनदयाल, हील इंटरनेशनल कंपनियों के विश्व प्रसिद्ध आयुर्वेद दवाओं के थोक एवं चिल्हर विक्रेता
संबंधित प्रतिष्ठान - किसलय होम्यो एवं आयुर्वेद एजेंसी
मगेन्द्र ब्रदर्स काम्पलेक्स बस स्टैण्ड गुरूर मो. 78577-03088
किसलय आयुर्वेद, जड़ी-बुटी एवं पूजन सामग्री स्टोर्स
रामघाट हीरापुर चौक बालोद मो. 7247520814
छ.ग. शासन द्वारा परंपरागत हर्बल चिकित्सक सम्मान प्राप्त
प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य
गव्य सिद्ध
डॉ पुरुषोत्तम सिंह राजपूत
निवासी-ग्राम बेलमांड,
जिला-बालोद छ.ग.

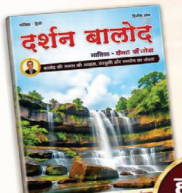

हार्दिक शुभकामनाएं
दर्शन बालोद
मासिक पत्रिका के
द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन पर
हार्दिक बधाई
दर्शन बालोद
द्वारा बालोद जिले की सकारात्मक चीजों को सामने लाने का जो प्रयास किया जा रहा है वह
सराहनीय है....
उत्तरोत्तर प्रगति की कामना के साथ
संपादक
माधुरी दीपक यादव जी
शुभेच्छु :
लाल निवेंद्र सिंह टेकाम
अध्यक्ष, नगर पंचायत डौंडीलोहारा
आपकी यह पहल निश्चित रूप से समाज और जिले के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी। आगे भी ऐसे ही रचनात्मक प्रयास करते रहें।

CO#OPS DAY
International Day of Cooperatives
Cooperatives for a peaceful world
4 July 2026
समस्त किसान भाइयों को सहकारिता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सेवा सहकारी समिति सांकरा ज
पंजीयन क्रमांक 1166 जिला - बालोद, छग.
सहकारिता से समृद्धि
सहकारिता से शांति
सुशील दास मानिकपुरी
सहायक प्रबंधक सांकरा ज
छगन देशमुख
प्राधिकृत अधिकारी सांकरा ज
सेवा सहकारी समिति सांकरा ज
पंजी.क्रमांक 1166
आपका हार्दिक स्वागत करता है
रमेश यादव कंप्यूटर ऑपरेटर, होमेन्द्र देशमुख सहायक लिपिक, रोहित विश्वकर्मा चपरासी

फिजियोथेरेपी, आर्थो - न्यूरो रिहैब सेंटर
आशीर्वाद, दुर्ग रोड, लाटाबोड़, बालोद (छ.ग.)
ISO CERTIFIED
नर्सिंग होम एक्ट अंतर्गत पंजीकृत क्लीनिक
An ISO 9001:2015 Certified Clinic
डॉ. वीरेन्द्र गंजीर
BPT MPH FETP (IIPH-NCDC DELHI) MIRCS वरिष्ठ चिकित्सा विशेषज्ञ: फिजियोथेरेपी एवं महामारी विज्ञान गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज (मेकाहारा) रायपुर(छ.ग.) , एशियन इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ, भुवनेश्वर (ओड़िशा) राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंन्द्र (नई दिल्ली) से प्रशिक्षित
पूर्व सलाहकार सह सहायक प्रबंधक :
राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम, भोपाल पूर्व सलाहकार, राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान रायपुर पूर्व जिला महामारी विशेषज्ञ महामारी नियंत्रण इकाई, स्वास्थ्य विभाग, बालोद
क्या आप इनमें से कोई भी दर्द से परेशान हैं ?
गर्दन में दर्द, कंधों में दर्द, कोहनी में दर्द, हाथो में दर्द, पीठ का दर्द, कुल्हो में दर्द, जांघो में दर्द, घुटनों में दर्द, टखनों में दर्द, एड़ी में दर्द, लकवा, हाथ पैरों में सुनझुनी
तो आइए हमारे पास आधुनिक भौतिक चिकित्सा पद्धति से मांसपेशियों, नसों एवं जोड़ों की समस्याओं का इलाज कराइए
अप्वाइंटमेंट लेना अनिवार्य है- अप्वाइंटमेंट हेतु सुबह 07 से 08 बजे के मध्य ही कॉल करें। कॉल करें: 777-1963-123
समय
प्रतिदिन सुबह 10 से दोप.01 बजे तक, शाम 04 से 07 बजे तक
रविवार- सुबह 10 बजे से दोपहर 02 बजे तक(मंगलवार अवकाश)
विश्व चिकित्सक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अब आपके शहर बालोद में बड़े शहरों जैसी सुविधाओं युक्त

FREE WIFI

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी

A Complete Self Study Center

Email-gyangangabalod@gmail.com Mo. 7999749246, 7697109448

स्व अध्ययन करने का सर्वोत्तम स्थान

सीमित सीटें... पहले आओ, पहले पाओ

Time 8 AM TO 8 PM

Limited Seats

APPLY NOW

3 DAY DEMO

1. स्वच्छ व शांतिपूर्ण वातावरण
2. आरामदायक केबिन और कुर्सियाँ
3. सुरक्षा के लिए सी.सी.टी.वी. कैमरा
4. हाई स्पीड फ्री वाई-फाई (wi-fi) अनलिमिटेड इंटरनेट
5. दैनिक समाचार पत्र एवं मासिक पत्रिकाएं
6. वातानुकूलित एयर कंडीशनर (AC) हॉल
7. स्वच्छ पीने का पानी
8. लॉकर सुविधा उपलब्ध

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी में आकर एक उचित माहौल में UPSC, PSC, JEE, NEET, व्यापम व सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के स्व अध्ययन करने का महत्वपूर्ण स्थान

10 वीं से 12वीं तक के बच्चों के लिए विशेष डिस्काउंट !

लाइब्रेरी क्यों जरूरी है...?

- घर में पढ़ाई करते वक्त 1 घंटे के बाद लगता है कि हम ही पढ़ाई कर रहे है, थोड़ा सो जाते हैं, थोड़ा घूम लेते हैं। कभी कोई मेहमान आ गया या कोई घर का काम आ गया, इन सब का असर आपकी पढ़ाई पर पड़ता है और अपनी परीक्षा की तैयारी पूर्ण मन से नहीं कर पाते।
- घर में Online Class अगर लेते हैं, तो बीच-बीच में बहुत Disturb हो जाते हैं।
- आप बड़े शहर में जाकर कोचिंग लेकर पढ़ते हैं तो घर से कई महीनों तक दूर रहते हैं।

लाइब्रेरी में पढ़ने के फायदे...

- लाइब्रेरी में एक अच्छा माहौल मिलने से सबके साथ बैठकर पढ़ने से आपके अंदर भी भावना आएगी और आपका मन सिर्फ पढ़ाई में ही लगेगा। दूसरों को पढ़ता हुआ देखकर आप भी लगातार अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मोटिवेट रहेंगे।
- लाइब्रेरी में Online Class लेकर कई घंटों तक लगातार पढ़ाई कर सकते हैं। हमें कोई Disturb करने वाला नहीं होगा और हम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहेंगे।
- लाइब्रेरी में हम अपने घर के पास रहकर ही पढ़ाई कर सकते हैं।

FACILITIES WE PROVIDE

1. Peaceful conductive and Inspiring Environment.
2. Comfort sitting Arrangement.
3. C.C.TV Surveillance.
4. Free High speed wi-fi.
5. Major News Papers and Magazine.
6. Fully Air Conditioned hall.
7. Pure drinking water.
8. Locker Facilities Available.
9. Led light with charging Points.

-: सुविधाएं उपलब्ध :-

1. स्वच्छ व शांतिपूर्ण वातावरण।
2. आराम दायक केबिन और कुर्सियाँ।
3. सुरक्षा के लिए सी.सी.टीवी कैमरा।
4. हाई स्पीड फ्री वाई-फाई अनलिमिटेड इंटरनेट।
5. दैनिक समाचार पत्र एवं मासिक पत्रिकाएं।
6. वातानुकूलित एयर कंडीशनर हॉल।
7. स्वच्छ पीने का पानी।
8. लॉकर सुविधा उपलब्ध।
9. एल.ई.डी. लाइट व चार्जिंग।

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी की उपलब्धि

- एक छात्र ने सीजी पीएससी में C.T.I. पोस्ट लिया है।
- एक ने C.A., 5 ने टीचर, 2 आर्मी में, 1 पुलिस में, 1 लेखापाल पोस्ट प्राप्त किया है।

C.T.I. CGPSC | C.A. | 5 टीचर | 2 आर्मी | 1 पुलिस | 1 लेखापाल

स्थान :- बस स्टैंड के पास परसुराम चौक, शीतला मंदिर के सामने शिवांगन सदन, बालोद

संचालक मोहन साहू

7999749246
7697109448

योग करें, निरोग रहें | स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, खुशहाल जीवन

21 जून अंतरराष्ट्रीय

योग दिवस

स्वयं और समाज के लिए योग

"योग से ही है स्वास्थ्य,
स्वास्थ्य से ही है सुख
सुख से ही है शांति,
शांति से ही है जीवन"

सहायक शिक्षक
शासकीय प्राथमिक शाला बड़गांव
संकुल बड़गांव
विकासखंड डोंडीलोहारा

कमल कांत साहू

मीडिया प्रभारी, पतंजलि योग समिति बालोद

आप सभी को
योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

स्वस्थ शरीर, शांत मन
योग से जीवन धन

21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

दर्शन बालोद
मासिक पत्रिका द्वारा
योग विशेषांक
प्रकाशन की हार्दिक बधाई

शुभेच्छु :

विरेंद्र कुमार बघेल

प्रशिक्षण अधिकारी शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था दल्लीराजहरा
ब्लॉक प्रभारी युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार
विकासखंड डोंडीलोहारा, जिला बालोद (छ.ग.)

दर्शन बालोद

मासिक पत्रिका

दर्शन बालोद मासिक पत्रिका के
द्वितीय अंक के प्रकाशन पर
पूरी टीम को
हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु

नारेन्द्र देवांगन

सरपंच
ग्राम पंचायत परना, आश्रित ग्राम परसवानी,
विकासखंड- गुंडरदेही | जिला- बालोद

समस्त किसान भाइयों को सहकारिता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
International Day of Cooperatives
Cooperatives for a peaceful world
4 July 2026
सहकारिता - सशक्त समाज, समृद्ध राष्ट्र
साथ मिलकर, बड़े सपनों की ओर
श्री केदार कश्यप जी
सहकारिता मंत्री छ.ग. शासन
श्री प्रीतपाल बेलचंदन जी
अध्यक्ष जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या, शाखा दुर्ग
सहकारिता से सशक्त किसान
सहकारिता से सशक्त समाज
सहकारिता से समृद्ध देश
श्री नरेश यादव जी
उपाध्यक्ष जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या, शाखा दुर्ग
एकता से विकास, सहकारिता से समृद्धि का विश्वास !
सहकारी संस्था
आइए, सहकारिता को अपनाएं, खुशहाल भविष्य का निर्माण करें!
जय सहकारिता ! जय किसान ! जय भारत !

1998 से संचालित
AISECT BALOD
Education Empowerment Enterprise
एडमिशन जारी है
सीखें आज, सफल बनें कल
कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र
आधुनिक सुविधाओं के साथ गुणवतापूर्ण शिक्षा
P.G.D.C.A. Post Graduate Diploma In Computer Application
D.C.A. Diploma In Computer Application
B.C.A. Bachelor of Computer Application
M.Sc.IT Post Graduate Diploma In Computer Application
B.Lib., B.A., B.Com., B.Sc., M.A., M.Sc., M.Com.
And Many More Courses
श्रीमती प्रीति देशमुख
संचालिका
आईसेक्ट कम्प्यूटर्स बालोद
केंद्रीय महिला अध्यक्ष
दिल्लीवार कुर्मी क्षत्रिय समाज (छ.ग.)
हमारी विशेषताएँ
अनुभवी एवं योग्य प्रशिक्षक
आधुनिक कम्प्यूटर लैब
व्यावहारिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण
रोजगारोन्मुखी कोर्स
सरकारी एवं निजी क्षेत्र में करियर के श्रेष्ठ अवसर
100% प्लेसमेंट सहयोग
AISECT BALOD गुणवत्ता हमारी पहचान
सम्मान एवं उपलब्धियां
बेहतर शिक्षा
बेहतर भविष्य
आपका विश्वास
हमारी जिम्मेदारी
सीमित सीटें जल्दी करें
9425542922
07749-796520
aisect.balod2@gmail.com
आईसेक्ट कंम्प्युटर गंगा सागर तालाब बालोद

सन्-1960 सदगुरु कबीर आश्रम करहीभदर
सन-1960 से संचलित
सदगुरु कबीर की पावन जयंती
पर आपको और आपके परिवार को
कबीर जयंती
की
हार्दिक शुभकामनाएं
सदगुरु कबीर जी के अमर दोहे
बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना,
मुझसे बुरा न कोय ॥
माला फेरत जुग भया,
फिरा न मन का फेर।
कर का मनका छोड़ी दे,
मन का मनका फेर ॥
पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ,
पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होय ॥
सांई इतना दीजिए,
जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं,
साधु न भूखा होय ॥
सद्गुरु कबीर जी की शिक्षाएं हमें सत्य, प्रेम, समता और मानवता का मार्ग दिखाती हैं। आइए, उनके बताए सादे जीवन, उच्च विचार और सेवा के मार्ग पर चलने का संकल्प लें।
सद्गुरु कबीर आश्रम करहीभदर
जिला – बालोद, छत्तीसगढ़
कबीर पंथ की अमूल्य परंपरा को समर्पित
सेवा, साधना और समरसता का केंद्र

सरस्वती शिशु मंदिर
स्वयमेव मृगेन्द्रता
"बालदेवो भव"
चुनें.... अपने पाल्य / पाल्या की सर्वोत्तम शिक्षा-दीक्षा के लिए
नगर का श्रेष्ठ हिन्दी माध्यम निजी विद्यालय
विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली
एवं सरस्वती शिक्षा संस्थान, रायपुर से संबद्ध
गंगा मैय्या बाल कल्याण समिति, बालोद द्वारा संचालित – पंजीयन क्र. 2507
सरस्वती शिशु मंदिर
उच्च. माध्य. विद्यालय, बालोद (छ.ग.)
सरयू प्रसाद अगवाल स्टेडियम के सामने, गंजपारा, बालोद
कक्षा अरूण एवं उदय (पूर्व प्राथमिक) से द्वादश तक हिन्दी माध्यम
सन्-1992 से संचालित
हमारी विशेषताएं
विश्व के सबसे बड़े अशासकीय शिक्षण संस्थान से संबद्धता।
संस्कारक्षम वातावरण न्यूनतम शुल्क व्यवस्था।
आचार्यों का नियमित उन्मुखीकरण प्रशिक्षण।
विद्यालयारंभ में संगीतमय प्रार्थनाओं भरा आध्यात्मिक वातावरण-निर्माण।
प्रतिमाह मासिक सत्त् एवं व्यापक मूल्यांकन।
संस्थान द्वारा पुषक से शैक्षिक, बौद्धिक शारीरिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन।
शासन द्वारा प्रदत्त सभी प्रकार की छात्रवृत्तियां व निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों का लाभ।
एन.एस.एस. का संचालन।
आचार्यों द्वारा सतत् अभिभावक संपर्क एवं विद्यार्थी के शैक्षिक विकास पर चर्चा।
कम्प्यूटर शिक्षा, शिशु वाटिका में खेल युक्त शिक्षा सुविधा।
संगीत एवं योगशिक्षा, प्राचीन वैदिक गणित पद्धति का ज्ञान।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार कला समेकित शिक्षण व्यवस्था प्रारंभ।
हमारे उद्देश्य
बालक का शैक्षिक, चारित्रिक, नैतिक, शारीरिक सहित सर्वांगीण विकास
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा चरित्र-निर्माण
आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास संस्कार एवं संस्कृति की शिक्षा
राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत भावी पीढ़ी का निर्माण
हमारे संसाधन
सर्व सुविधायुक्त एवं सुसज्जित स्वयं का भवन
प्रशिक्षित योग्य एवं अनुभवी आचार्य
पुस्तकालय
• विस्तृत खेल का मैदान
पृथक-पृथक विज्ञान प्रयोगशालाएं
वर्ष 2022-23 से अटल टिंकरिंग लैब की सुविधा
9407937466 (विद्यालय)
9179691343 (प्राचार्य)
9425554511 (अध्यक्ष)
89820 20966 (कोषाध्यक्ष)
Email- ssm.balod@gmail.com

सभी चिकित्सकों को
विश्व चिकित्सक दिवस
1 जुलाई
की हार्दिक शुभकामनाएं
आपका समर्पण, सेवा और त्याग
हमारे जीवन की सबसे बड़ी ताकत है।
आपके अथक प्रयासों से ही
समाज स्वस्थ और सुरक्षित है।
आपका धन्यवाद !
आप जैसे देवदूतों को शत-शत नमन
पुंगनूर गाय
दुनिया की सबसे छोटी नस्ल की गाय जो आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में पायी जाती है। इस जिले के पुंगनूर शहर पर इसका नाम रखा गया है। इसकी ऊंचाई 97-107 सेमी.और वजन 170-240 कि.ग्रा. के बीच होती है तथा दुध उत्पादन 1-2 कि.ग्रा. प्रतिदिन होती है।
विशेष :- कृत्रिम गर्भाधान द्वारा यह गाय अब बालोद जिले में भी उत्पन की गई है।
"आपकी सेवा, हमारी सेहत की सबसे बड़ी दवा है।"
पशु पालक
श्री गौरव महेश्वरी, ग्राम पैरी
कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता
श्री घनश्याम यदु
खेरुद विकासखंड गुंडरदेही, जिला बालोद (छ.ग.)

छोटे शहर से बड़े सपनों तक: 1998 से 5000 से अधिक युवाओं के भविष्य को दिशा दे रहा आईसेक्ट कम्प्यूटर्स बालोद

शिक्षा, तकनीक और आत्मनिर्भरता का केंद्र बना संस्थान, संचालिका प्रीति देशमुख ने कहा– बदलते दौर में कम्प्यूटर शिक्षा ही नई साक्षरता

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

आज का दौर तकनीक, नवाचार और डिजिटल परिवर्तन का दौर है। ऐसे समय में शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रह गई, बल्कि कम्प्यूटर और तकनीकी ज्ञान सफलता की नई पहचान बन चुके हैं। इसी सोच को वर्षों पहले अपनाते हुए आईसेक्ट कम्प्यूटर्स बालोद ने जिले में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक मजबूत पहचान बनाई और हजारों युवाओं के सपनों को नई उड़ान दी।

30 जून 1998 से संचालित यह संस्थान

आज जिले के विद्यार्थियों के लिए भरोसे का नाम बन चुका है। स्थापना से लेकर अब तक 5000 से अधिक छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जा चुका है, जो आज विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सफलता की कहानी लिख रहे हैं। संस्थान की संचालिका श्रीमती प्रीति देशमुख बताती हैं कि वर्तमान समय में कम्प्यूटर शिक्षा केवल एक अतिरिक्त योग्यता नहीं बल्कि जीवन और करियर की आवश्यकता बन चुकी है। उनका मानना है कि बदलती टेक्नोलॉजी के साथ कदम मिलाने के लिए युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनना बेहद जरूरी है।

तकनीकी शिक्षा के माध्यम से बदल रही युवाओं की दिशा

आईसेक्ट कम्प्यूटर्स बालोद में समय की मांग के अनुरूप आईटी आधारित पाठ्यक्रमों को आधुनिक स्वरूप दिया गया है, ताकि विद्यार्थियों को रोजगार, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं और उच्च

शिक्षा के लिए तैयार किया जा सके। संस्थान को समय-समय पर प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों से जुड़ने का अवसर मिला है। इनमें गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) तथा छत्तीसगढ़ के प्रथम निजी विश्वविद्यालय डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय जैसे संस्थान शामिल रहे हैं। वर्तमान में यह शाखा डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर की अधिकृत सूचना केंद्र के रूप में विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान कर रही है।

शिक्षा के साथ समाज सेवा में भी सक्रिय भूमिका

संस्थान की संचालिका श्रीमती प्रीति देशमुख शिक्षा के साथ सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। वे दिल्लीवार कुर्मी क्षत्रिय

समाज (छत्तीसगढ़) की केंद्रीय महिला अध्यक्ष के रूप में समाज सेवा और नेतृत्व को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील करते हुए कहा— "आज की दुनिया में सीखना ही आगे बढ़ने का सबसे बड़ा माध्यम है। तकनीकी शिक्षा अपनाइए, अपने सपनों को दिशा दीजिए और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहभागी बनिए।" 5000 से अधिक विद्यार्थियों के विश्वास और सफलता के साथ आईसेक्ट कम्प्यूटर्स बालोद आज भी शिक्षा और तकनीक के संगम से नई पीढ़ी का भविष्य गढ़ने में जुटा हुआ है।

एक ही परिसर में तकनीकी और उच्च शिक्षा की सुविधा

संस्थान में विद्यार्थियों के लिए बीसीए, एमएससी आईटी, डीसीए, पीजीडीसीए जैसे सूचना प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों के साथ बीए, एमए, बीएससी, एमबीए जैसे डिग्री पाठ्यक्रमों हेतु भी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाता है। यहां विद्यार्थियों को केवल पढ़ाई नहीं बल्कि करियर निर्माण, आत्मविश्वास और भविष्य की तैयारी का वातावरण भी मिलता है।

कई छात्रों ने हासिल की सरकारी व पेशेवर सफलता: ज्ञान गंगा लाइब्रेरी बना बालोद के युवाओं की सफलता का नया पता

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को मिल रहा बड़े शहरों जैसा अध्ययन वातावरण

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता केवल मेहनत से नहीं, बल्कि सही माहौल, अनुशासन और निरंतर अध्ययन से भी तय होती है। इसी सोच के साथ बालोद शहर में शुरू हुई ज्ञान गंगा लाइब्रेरी आज युवाओं के लिए प्रेरणा और सफलता का केंद्र बनती जा रही है।बड़े शहरों जैसी सुविधाओं से युक्त यह स्व अध्ययन केंद्र (Self Study Center) विद्यार्थियों को शांत, व्यवस्थित और प्रेरणादायक वातावरण उपलब्ध करा रहा है, जहां छात्र अपने लक्ष्य पर पूरी एकाग्रता के साथ तैयारी कर रहे हैं।

घर की परेशानियों से दूर, पढ़ाई के लिए बना बेहतर विकल्प

अक्सर घर पर पढ़ाई करते समय विद्यार्थियों का ध्यान भटक जाता है। कभी घरेलू काम, कभी मेहमान, कभी मोबाइल और कभी अन्य व्यवधान पढ़ाई की गति को प्रभावित करते हैं। ऐसे में ज्ञान गंगा लाइब्रेरी विद्यार्थियों को ऐसा माहौल दे रही है जहां घंटों तक निरंतर अध्ययन किया जा सके। विशेष रूप से UPSC, CGPSC, JEE, NEET, NET-JRF, व्यापम तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह स्थान उपयोगी साबित हो रहा है।

सुविधाएं जो पढ़ाई को बनाएं आसान

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी में विद्यार्थियों के लिए अनेक आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं—

- **स्वच्छ एवं शांतिपूर्ण अध्ययन वातावरण**
- **आरामदायक केबिन एवं बैठने की व्यवस्था**
- **सुरक्षा के लिए सीसीटीवी निगरानी**
- **हाई स्पीड फ्री वाई-फाई एवं अनलिमिटेड इंटरनेट**
- **दैनिक समाचार पत्र एवं मासिक पत्रिकाएं**

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी बालोद के संचालक मोहन साहू

- **वातानुकूलित (AC) अध्ययन हॉल**
- **स्वच्छ पेयजल सुविधा**
- **लॉकर सुविधा**
- **एलईडी लाइट एवं चार्जिंग पॉइंट**

सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक संचालित यह लाइब्रेरी विद्यार्थियों को अपनी सुविधा के अनुसार अध्ययन का अवसर प्रदान करती है।

उपलब्धियां बता रही सफलता की कहानी

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी से जुड़कर कई विद्यार्थियों ने सफलता हासिल की है। यहां अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में

- **एक छात्र ने CGPSC के माध्यम से C.T.I. पद प्राप्त किया**
- **एक विद्यार्थी ने C.A. में सफलता प्राप्त की**
- **5 विद्यार्थी शिक्षक पद पर चयनित हुए**
- **2 विद्यार्थी सेना में चयनित हुए**
- **1 विद्यार्थी पुलिस विभाग में चयनित हुआ**
- **1 विद्यार्थी लेखापाल पद तक पहुंचा**

ये उपलब्धियां इस बात का प्रमाण हैं कि सही माहौल और निरंतर प्रयास सफलता की राह आसान बना सकते हैं।

युवाओं को मिल रहा लक्ष्य की ओर बढ़ने का मंच

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी के संचालक मोहन साहू का उद्देश्य केवल सीट उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को ऐसा अध्ययन वातावरण देना है जहां वे अपने सपनों को दिशा दे सकें। विशेष रूप से 10वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए विशेष छूट भी उपलब्ध है तथा सीमित सीटों के कारण पहले आओ–पहले पाओ की व्यवस्था रखी गई है।

स्थान – बस स्टैंड के पास, परशुराम चौक, शीतला मंदिर के सामने, शिवांगन सदन, बालोद संपर्क – 7999749246, 7697109448

ज्ञान गंगा लाइब्रेरी आज केवल एक अध्ययन केंद्र नहीं, बल्कि बालोद के युवाओं के सपनों को आकार देने वाला एक प्रेरक मंच बनकर उभर रहा है।

9 बच्चों से शुरू हुआ सफर, आज हजारों सपनों की पहचान: सरस्वती शिशु मंदिर बालोद बना शिक्षा, संस्कार और राष्ट्र निर्माण का प्रेरक केंद्र

34 वर्षों से बालोद में ज्ञान, संस्कार और व्यक्तित्व निर्माण की अलख जगा रहा है सरस्वती शिशु मंदिर

बालोद

शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह समाज के भविष्य का निर्माण करती है। इसी सोच को आधार बनाकर वर्ष 1992 में मात्र 9 विद्यार्थियों और अरुण-उदय कक्षाओं से शुरू हुआ सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बालोद आज जिले के प्रमुख और प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में अपनी अलग पहचान बना चुका है। यह संस्था विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली एवं सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से संबद्ध है तथा गंगा मैय्या बाल कल्याण समिति, बालोद द्वारा संचालित की जा रही है।

एक छोटे से प्रयास से शुरू हुई बड़ी यात्रा

विद्यालय की स्थापना तत्कालीन प्रादेशिक सचिव माननीय सत्यनारायण अग्रवाल जी की प्रेरणा से हुई। प्रारंभिक दौर में विद्यालय का संचालन मधु चौक स्थित एक भवन से किया गया, जहां केवल अरुण और उदय कक्षाओं में पढ़ाई शुरू हुई थी। उस समय विद्यालय में केवल 9 विद्यार्थी थे, लेकिन शिक्षा और संस्कार का जो बीज बोया गया, वह आज विशाल वटवृक्ष बन चुका है। बाद में सुरेश चंद्र गांधी राजनांदगांव और समाज के सहयोग से 46 डिसमिल दान प्राप्त भूमि पर वर्तमान गंजपारा, अग्रवाल स्टेडियम के सामने विद्यालय का स्वयं का भवन निर्मित हुआ और संस्था लगातार आगे बढ़ती रही। विद्यालय के प्रथम प्रधानाचार्य श्री राधेश्याम पटेल रहे, जिन्होंने प्रारंभिक वर्षों में संस्था को मजबूत आधार दिया।

1993 से शुरू हुआ विस्तार, 2005 में पहुंची बारहवीं तक शिक्षा

विद्यालय ने निरंतर प्रगति करते हुए वर्ष 1993 से कक्षाओं का विस्तार प्रारंभ किया और वर्ष 2005 तक द्वादश (12वीं) तक की पढ़ाई शुरू हो गई। आज यहां पूर्व प्राथमिक (अरुण-उदय) से लेकर द्वादश तक हिन्दी माध्यम में शिक्षा दी जा रही है। विद्यार्थियों के लिए गणित, विज्ञान एवं कृषि संकाय उपलब्ध हैं।

यह हैं वे पहले बैच के बच्चे जिन्होंने 1992 में लिया था एडमिशन

लकी अरोरा पिता हरबंस, चेतना पिता

वर्तमान प्राचार्य
श्री दीनदयाल साहू

वर्तमान अध्यक्ष
श्री मोहन भाई पटेल

वर्तमान कोषाध्यक्ष
श्री लीलाधर साहू

वर्तमान व्यवस्थापक
सचिव श्री राजेश्वर राव कृदत्त

डीआर बंजारे, राधिका मंत्री पिता डॉ ओमप्रकाश, मनीष मंत्री पिता धर्म प्रकाश मंत्री, दीपक कुमार चेनानी पिता गम्बूमल चेनानी, लीना पाटीदार पिता डाया लाल, अंकुर पाण्डेय पिता अरुण कुमार, संचय शुक्ला पिता सत्यनारायण शुक्ला, दीपा कुमारी चेनानी पिता गंबूमल चेनानी आदि पहले बैच के बच्चे हैं। जो आज अपने जीवन में अलग-अलग मुकाम पर हैं।

संस्कार, अनुशासन और आधुनिक शिक्षा का अनूठा मेल

विद्यालय में बच्चों को केवल पाठ्य शिक्षा नहीं दी जाती, बल्कि संस्कार, योग, संगीत, वैदिक गणित, नैतिक शिक्षा, खेल, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रीय चेतना के साथ विकसित किया जाता है। विद्यालय की प्रमुख सुविधाओं में स्मार्ट क्लास, कम्प्यूटर शिक्षा, पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला, खेल मैदान, सांस्कृतिक गतिविधियां, शारीरिक शिक्षा, शिशु वाटिका, स्काउटिंग-गाइडिंग, रेडक्रॉस दल, छात्रवृत्ति योजना और अभिभावक संपर्क व्यवस्था शामिल हैं।

उपलब्धियों ने बढ़ाया विद्यालय का गौरव

विद्यालय ने शैक्षणिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। सत्र 2011-12 में दसवीं बोर्ड की प्रावीण्य सूची में पूजा थेर एवं पूजा मुंदड़ा ने स्थान प्राप्त किया, वहीं निखिल देशमुख ने बारहवीं बोर्ड की प्रावीण्य सूची में स्थान बनाकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

समर्पित प्रबंधन ने बनाया संस्थान को मजबूत

विद्यालय के विकास में समिति के पदाधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अध्यक्षों की गौरवशाली परंपरा

श्री राजेश्वर राव कृदत्त, श्री चंद्रप्रकाश टावरी, श्री रत्तीलाल पटेल, श्री मोहन भाई पटेल तथा श्री भरत गांधी ने विभिन्न कार्यकालों में संस्था को नेतृत्व प्रदान किया। वर्तमान कार्यकाल में पुनः श्री मोहन भाई पटेल (2024–2027) अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

सचिवों का योगदान

श्री राजेश मिश्रा, श्री राजेश्वर राव कृदत्त, श्री रत्तीलाल पटेल, श्री मोहन भाई पटेल, श्री गजेन्द्रपुरी गोस्वामी तथा श्री लीलाधर साहू ने सचिव पद पर रहते हुए संस्था को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रधानाचार्यों की समर्पित यात्रा

विद्यालय को आगे बढ़ाने में कई शिक्षकों ने प्रधानाचार्य के रूप में योगदान दिया, जिनमें—श्री राधेश्याम पटेल (1992–1994),श्री मुरारी लाल चंदन (1994–1996), श्री रवीन्द्र शर्मा (1996–2000), श्री भीषम कुमार साहू (2001–2002 एवं 2016–2021) प्रभारी प्राचार्य श्री भीषम कुमार साहू (2002–2011) प्रभारी प्राचार्य श्री डोमार सिंह साहू (2012–2016), प्रभारी प्राचार्य श्री जनक राम साहू (2021–2023), प्रभारी प्राचार्य श्री मुरलीधर साहू (2023–2024) तथा वर्तमान में प्रभारी प्राचार्य श्री दीनदयाल साहू संस्था का नेतृत्व कर रहे हैं।

वर्तमान स्टाफ शिक्षा की नई मिसाल गढ़ रहा

विद्यालय परिवार में वर्तमान में श्रीमती शारदा यादव, श्रीमती भुनेश्वरी सोनकर, श्री चंदूलाल पटेल, श्रीमती दीपाली साहू, श्री पवन कुमार गौतम, श्री धर्मेन्द्र गुरूपंच, श्रीमती रूपमती साहू, श्री देवधर साहू, श्री योगेश्वर प्रसाद यादव, कांती, रीना, किरण, नीतू, दिव्या, लक्ष्मी देवी, छविकांत चंद्राकर, युवराज कुमार, चितेश्वरी साहू, शारदा देवी साहू, दीपिका देशमुख तथा रोशन साहू सहित पूरा स्टाफ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान दे रहा है।

प्रवेश प्रारंभ: भविष्य निर्माण का अवसर

विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि नए सत्र के लिए प्रवेश प्रारंभ हो चुके हैं। पालकों से अपील की गई है कि वे अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जहां ज्ञान के साथ संस्कार और जीवन मूल्य भी मिलें। "बाल देवो भवः" की भावना के साथ सरस्वती शिशु मंदिर बालोद आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को आकार देने के अपने संकल्प के साथ निरंतर आगे बढ़ रहा है।

संस्था में प्रवेश और अधिक जानकारी हेतु इनसे संपर्क कर सकते हैं - 9407937466 (विद्यालय), 9179691343 (प्राचार्य), 9425554511 (अध्यक्ष), 89820 20966 (कोषाध्यक्ष), Email-ssm.balod@gmail.com

कबीर आश्रम करहीभदर की प्रेरक कहानी
सत्संग, सेवा और समाज जागरण की अनूठी यात्रा

कबीर आश्रम करहीभदर में विविध आयोजन की झलकियां

वह कुआं जिससे कबीर आश्रम की शुरुआत हुई।

करहीभदर/बालोद ✍दर्शन बालोद✍

आध्यात्मिक चेतना, सेवा और समाज सुधार की भावना से जुड़ी कबीर आश्रम करहीभदर की यात्रा कई दशकों पुरानी है। यह केवल एक आश्रम नहीं बल्कि सत्संग, संस्कार और सामाजिक जागरूकता का ऐसा केंद्र बन चुका है, जिसने छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि देश के अन्य राज्यों तक अपनी पहचान बनाई है।

1960 के दशक से शुरू हुई आध्यात्मिक यात्रा

बताया जाता है कि वर्ष 1960 के आसपास भक्तमति बिसौनी बाई एवं उनके पति भक्त श्री संत राम साहू सत्संग से प्रभावित हुए। उस समय वे असम में मेहनत-मजदूरी कर जीवन यापन करते थे। अपनी मेहनत की कमाई से उन्होंने करही-भदर क्षेत्र में लगभग आधा एकड़ भूमि खरीदी और यहां एक कुएं का निर्माण कराया। इसी आध्यात्मिक भावना के साथ उन्होंने सद्गुरु राम सूरत साहेब (जो सदगुरु अभिलाष साहेब के गुरु थे) को अयोध्या से आमंत्रित कर भंडारे का आयोजन कराया और स्वयं को उनकी सेवा और विचारधारा में आश्रम समर्पित कर दिया। इसके बाद आश्रम की गतिविधियां धीरे-धीरे विस्तार लेने लगीं।

संतों के मार्गदर्शन से गया आश्रम

समय के साथ अनेक संत और शिष्य यहां आकर जुड़े। इनमें धर्म साहेब, सजीवन साहेब (बिहार-अयोध्या), अमृत साहेब (नयापारा राजिम), चैन साहेब तथा अन्य संतों का योगदान रहा। आश्रम के विकास में स्वर्गीय उबार साहेब की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनका 7 जनवरी 2022 को निधन हो गया। वर्तमान में आश्रम का संचालन और व्यवस्थापन सुशांत साहेब के नेतृत्व में किया जा रहा है।

व्यवस्थापक सुशांत साहेब

संत प्रवर श्री अभिलाष साहेब

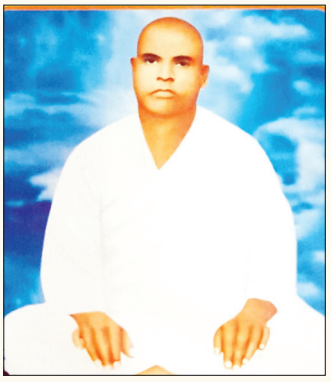
सद्गुरु रामसूरत साहेब

संत श्री गुरुभूषण साहेब जी

कबीर आश्रम की नींव रखने वाले दंपती भक्तमति बिसौनी बाई और श्री संतराम साहू जी की समाधि

देवेंद्र साहेब का जुड़ाव और शिक्षा–संस्कार का विस्तार

करीब 1985 में 17 वर्ष की आयु में बी एस सी प्रथम वर्ष के दौरान देवेंद्र साहेब सद्गुरु अभिलाष साहेब जी के संपर्क में आए। उनका मूल निवास कुरूद क्षेत्र के नवागांव उमरदा बताया जाता है। परिसर में एक समय खपरैल वाले आश्रम भवन में शारदा विद्या पीठ नामक स्कूल भी संचालित हुआ करता था। आज दान दाताओं के प्रयास से आश्रम में भव्य पक्का भवन और संतो का निवास स्थल बन चुका है।

छत्तीसगढ़ से बाहर तक फैला आध्यात्मिक परिवार

कबीर आश्रम करहीभदर से आज हजारों लोग जुड़े हुए हैं। छत्तीसगढ़ के अलावा महाराष्ट्र,बिहार,बंगाल, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा लखनऊ और नेपाल तक इसके अनुयायी और श्रद्धालु सक्रिय हैं। आश्रम में समय-समय पर विभिन्न धार्मिक और सामाजिक आयोजन किए जाते हैं, जिनमें प्रमुख हैं— ग्रीष्म अवकाश में बाल संस्कार शिविर, सद्गुरु कबीर जयंती, गुरुपूर्णिमा महोत्सव, 17 अगस्त को सद्गुरु अभिलाष साहेब जयंती, 22 से 26 सितंबर तक ध्यान शिविर सदगुरु अभिलाष साहेब की निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रति वर्ष होते आ रहा है। ध्यान शिविर में जगन्नाथपुर में जन्मे संत गुरुभूषण साहेब, सूरत आश्रम से तथा अयोध्या से आचार्य श्री संत परीक्षा साहेब जैसे संतों का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। आश्रम की गतिविधियां वरिष्ठ संतों के सुझाव और दिशा-निर्देशन में संचालित होती हैं।

संत देवेंद्र साहेब जी जो नेत्रदान और देहदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित हुए हैं।

देहदान और नेत्रदान से समाज में नई सोच

आध्यात्मिकता के साथ-साथ आश्रम ने समाज सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। वर्ष 2015 से देवेंद्र साहेब के नेतृत्व में नेत्रदान और देहदान जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस पहल के तहत 500 से अधिक लोगों ने सहभागिता दिखाई है। जानकारी के अनुसार धमतरी जिले में अब तक 57 लोगों का नेत्रदान पूरा हुआ,जिनमें 17 लोग करहीभदर से प्रेरित होकर नेत्रदान किए थे। विशेष बात यह है कि स्वयं आश्रम से जुड़े लोग भी इस संकल्प पत्र को भरकर समाज को प्रेरित कर रहे हैं। उनका संदेश है कि विवेक और विचार ही जीवन की सच्ची दृष्टि हैं और सेवा ही मानवता का सर्वोच्च मार्ग है। बसंत पंचमी के अवसर पर आयोजित वार्षिक सम्मेलन में भी देहदान और नेत्रदान का संकल्प लेने वालों का सम्मान किया जाता है। इस अवसर पर माननीय कलेक्टर महोदय बालोद पधार का देहदान करने वाले को सम्मान पत्र प्रदान किए। आज व्यवस्थापक सुशांत साहेब के साथ देवेंद्र साहेब, मितेश साहेब, जीवेंद्र साहेब और दिनेंद्र साहेब आश्रम की गतिविधियों को आगे बढ़ा रहे हैं और करहीभदर स्थित कबीर आश्रम को सेवा, संस्कार और सामाजिक चेतना का केंद्र बनाए हुए हैं।

शहर की जगह गांव चुना, सेवा को बनाया जीवन का लक्ष्य: डॉ. वीरेन्द्र गंजीर की प्रेरक कहानी

100 से अधिक बच्चों का निःशुल्क उपचार, गांव में शुरू किया संभवतः प्रदेश का पहला ग्रामीण फिजियोथेरेपी सेंटर

बालोद/लाटाबोड़ ✍दर्शन बालोद✍

चिकित्सा केवल पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम भी हो सकती है—यह बात साबित कर रहे हैं बालोद जिले के डॉ. वीरेन्द्र गंजीर, जिन्होंने बड़े शहरों की सुविधाओं और करियर के अवसरों के बजाय गांव की जरूरतों को प्राथमिकता देते हुए एक ऐसी पहल शुरू की, जो आज अनेक लोगों के लिए उम्मीद बन चुकी है। जून 2021 में डॉ. वीरेन्द्र गंजीर ने लाटाबोड़ (बालोद) में अपना फिजियोथेरेपी एवं न्यूरो रिहैब सेंटर शुरू किया। विशेष बात यह रही कि यह पहल ग्रामीण क्षेत्र में आधुनिक फिजियोथेरेपी सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई। बताया जाता है कि यह अपने प्रकार का देश और प्रदेश स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित शुरुआती मॉडलों में शामिल रहा, जिसके लिए उन्हें राष्ट्रीय संगोष्ठी में IAP द्वारा "फिजियो आइकन" अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

जहां डॉक्टर शहर गए, वहां इन्होंने गांव चुना-अक्सर चिकित्सक अपनी शिक्षा और प्रशिक्षण के बाद बड़े शहरों में सेवाएं देना पसंद करते हैं, लेकिन डॉ. गंजीर ने अलग रास्ता चुना। उनका मानना था कि फिजियोथेरेपी जैसी आधुनिक चिकित्सा सुविधा गांवों तक पहुंचनी चाहिए क्योंकि ग्रामीण परिवारों के लिए बार-बार शहर जाकर इलाज कराना आर्थिक और सामाजिक रूप से कठिन होता है। उन्होंने देखा कि जागरूकता की कमी के कारण कई मरीज लंबे समय तक केवल इंजेक्शन और दवाइयों पर निर्भर रहते हैं, जबकि कई समस्याओं में भौतिक चिकित्सा (फिजियोथेरेपी) बेहतर सहायक भूमिका निभा सकती है। धीरे-धीरे लोगों में जागरूकता बढ़ी और आज बड़ी संख्या में ग्रामीण इस चिकित्सा पद्धति का लाभ ले रहे हैं।

एक बच्चे की कहानी से शुरू हुई निःशुल्क सेवा-डॉ. गंजीर बताते हैं कि वर्ष 2021 में एक छोटा बच्चा उपचार के लिए आया, लेकिन केवल सात दिन बाद उसके माता-पिता आर्थिक कठिनाई के कारण उपचार बंद कर बैठे। परिवार पहले भी इसी कारण दूसरे शहर में इलाज छोड़ चुका था। जब उन्होंने पूरे खर्च का आकलन किया तो पता चला कि इलाज, यात्रा, रहने और रोजमर्रा के खर्च मिलाकर परिवार पर लगभग 40 हजार रुपये प्रतिमाह का बोझ पड़ रहा था। यही घटना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बनी। उन्होंने संकल्प लिया कि आर्थिक अभाव किसी बच्चे के उपचार में बाधा नहीं बनेगा। तभी से 10 वर्ष तक के बच्चों के लिए उन्होंने निःशुल्क फिजियोथेरेपी उपचार शुरू किया। अब तक 100 से अधिक बच्चों का उपचार किया जा चुका है। वे बच्चों के स्वस्थ होने पर उनके नाम से एक पौधा लगाने की प्रेरणा भी देते हैं, जिससे स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों का संदेश आगे बढ़े।

मानव सेवा के लिए छोड़ी कई जिम्मेदार सरकारी भूमिकाएं- पारिवारिक परिस्थितियों और सेवा के उद्देश्य से डॉ. गंजीर ने कई महत्वपूर्ण पदों से कार्य किया और आवश्यक समय पर त्यागपत्र देकर नए रास्ते चुने। उन्होंने ओड़िशा के कोरापुट जिले में किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम में जिला प्रबंधक, मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK-चिरायु) में सहायक राज्य प्रबंधक, राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान रायपुर में सलाहकार, तथा रायपुर और बालोद में जिला महामारी एवं जन स्वास्थ्य विशेषज्ञ के रूप में सेवाएं दीं। कोविड संक्रमण काल में महामारी नियंत्रण और स्वास्थ्य प्रबंधन में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही।

फिजियोथेरेपी से दर्द नहीं, जीवन में बदलाव-पिछले पांच वर्षों से वे विशेष रूप से न्यूरोलॉजिकल समस्याओं पर कार्य कर रहे हैं। इसमें रीढ़ की हड्डी और नसों से जुड़ी समस्याएं, सायटिका, सर्वाइकल, लंबर स्पॉन्डिलाइटिस, कंधे और घुटनों का दर्द, कमर दर्द, गर्दन दर्द, झुनझुनी, लकवा और अन्य शारीरिक समस्याओं के उपचार में लोगों को मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

पढ़ाई से सेवा तक का सफर-डॉ. वीरेन्द्र गंजीर ने पंडित जवाहर लाल नेहरू गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज (मेकाहारा) रायपुर से फिजियोथेरेपी में स्नातक, भुवनेश्वर से लोक स्वास्थ्य (MPH) तथा राष्ट्रीय रोग नियंत्रण संस्थान, नई दिल्ली से प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

वे कहते हैं— "केवल पैसे कमाना ही जीवन का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। Service to Mankind is Service to God — मानव सेवा ही प्रभु सेवा है।"

क्राउड फंडिंग से भी बन रहे जरूरतमंदों का सहारा-उपचार सेवा के साथ-साथ डॉ. गंजीर जरूरतमंद मरीजों के लिए क्राउड फंडिंग के माध्यम से भी सहयोग जुटाने का कार्य कर रहे हैं। केवल इस वर्ष ही उनके प्रयासों से तीन मरीजों को लाखों रुपये की आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है। विश्व चिकित्सक दिवस के अवसर पर डॉ. वीरेन्द्र गंजीर जैसे चिकित्सक यह संदेश देते हैं कि इलाज केवल तकनीक नहीं, बल्कि संवेदना, समर्पण और समाज के प्रति जिम्मेदारी का नाम भी है। गांव में बैठकर बदलाव लाने की उनकी यह यात्रा अनेक युवाओं और चिकित्सकों के लिए प्रेरणा बन रही है।

69 से 144 तक पहुंचा सहकारिता का सफर : किसानों की ताकत बनी सहकारिता, विकास की नई पहचान बना बालोद

गांव-गांव तक पहुंची सुविधाएं, किसानों को मिला भरोसा और आत्मनिर्भरता का आधार

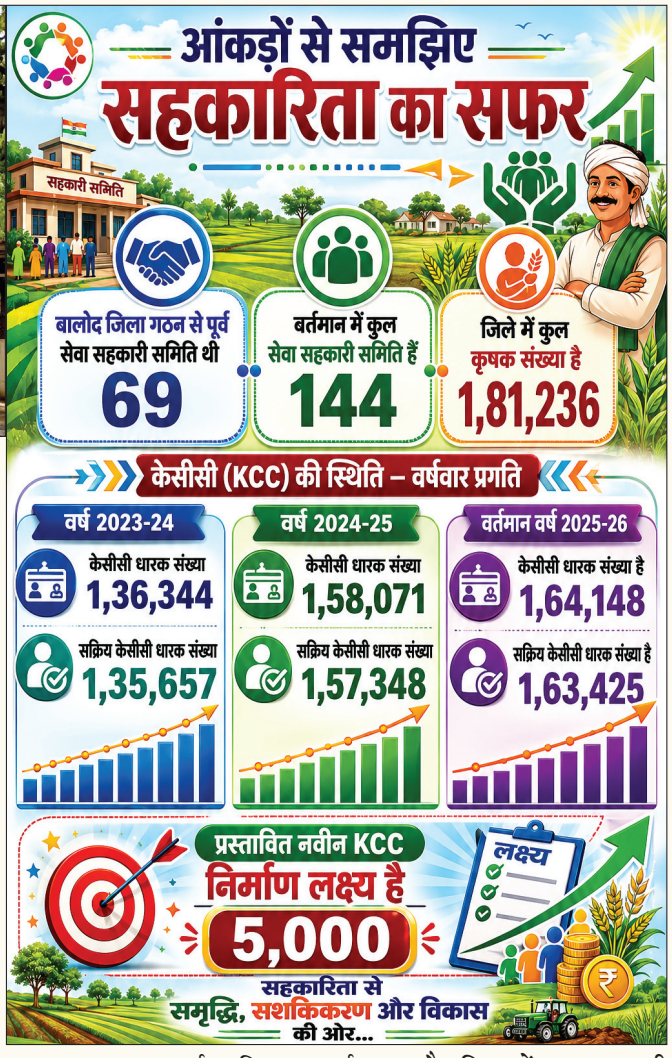

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

सहकारिता केवल आर्थिक व्यवस्था नहीं, बल्कि सामूहिक शक्ति, विश्वास और ग्रामीण विकास की वह मजबूत नींव है जिसने किसानों, ग्रामीण परिवारों और स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है। हर वर्ष जुलाई माह के प्रथम शनिवार को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 में यह दिवस 04 जुलाई को मनाया जाएगा। यह दिवस सहकारिता की भावना, साझेदारी, जनभागीदारी और समावेशी विकास के महत्व को रेखांकित करता है।

बालोद जिले में सहकारिता का सफर भी इसी सामूहिक विकास की प्रेरक कहानी बन चुका है। जिला गठन के समय जहां जिले में 69 सेवा सहकारी समितियां संचालित थीं, वहीं आज यह संख्या बढ़कर 144 तक पहुंच चुकी है। यह केवल संस्थाओं की संख्या में वृद्धि नहीं, बल्कि किसानों तक सुविधाओं की आसान पहुंच और मजबूत होती ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। जानकारी के अनुसार जिले में किसानों की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए 52 नई सेवा सहकारी समितियों का गठन किया गया तथा पूर्व संचालित समितियों का विस्तार और पुनर्गठन किया गया। इसके परिणामस्वरूप आज जिले का सहकारी नेटवर्क पहले की तुलना में कहीं अधिक मजबूत हुआ है।

सहकारी समितियों के विस्तार का सबसे बड़ा लाभ किसानों को मिला है। अब किसान अपने नजदीकी सहकारी केंद्रों से समय पर खाद और बीज प्राप्त कर पा रहे हैं, जिससे खेती की तैयारी आसान हुई है और उत्पादन क्षमता में भी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। इसी प्रकार किसानों को अपने क्षेत्र के नजदीकी उपार्जन केंद्रों में धान बेचने की सुविधा भी उपलब्ध हुई है। इससे लंबी दूरी तय करने की आवश्यकता कम हुई, परिवहन खर्च घटा और किसानों का समय भी बचा। आज सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को खाद-बीज वितरण, कृषि ऋण, समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, कृषि योजनाओं की जानकारी, वित्तीय सहयोग और ग्रामीण आर्थिक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। सहकारी व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक मजबूती और आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरी है। सहकारिता दिवस के अवसर पर जिला सहकारी क्षेत्र से जुड़े पदाधिकारियों ने भी अपने विचार साझा किए।

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के नोडल अधिकारी चिंता राम रावटे ने कहा— "सहकारिता का मूल उद्देश्य अंतिम व्यक्ति तक विकास की पहुंच सुनिश्चित करना है। किसानों को समय पर ऋण, खाद-बीज और योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। तकनीक और पारदर्शिता के माध्यम से सहकारिता को और मजबूत बनाया जा रहा है।"

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष प्रीतपाल बेलचंदन ने कहा— "सहकारिता का अर्थ केवल आर्थिक लेन-देन नहीं, बल्कि विश्वास और साझेदारी है। हमारी कोशिश है कि किसानों को उनके क्षेत्र में बेहतर सेवाएं और अधिक सुविधाएं उपलब्ध हों, जिससे गांवों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो।"

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक शाखा दुर्ग के उपाध्यक्ष नरेश यदु ने कहा—"सहकारिता ने गांवों को जोड़ा है और किसानों को आत्मनिर्भर बनाया है। आने वाले समय में युवाओं की भागीदारी और तकनीकी नवाचार से सहकारी व्यवस्था और मजबूत होगी।" उन्होंने कहा कि सहकारिता दिवस केवल उत्सव नहीं बल्कि यह संकल्प लेने का अवसर है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और सहयोग की भावना से समृद्ध समाज का निर्माण हो।

आज बालोद जिले का सहकारिता मॉडल यह संदेश देता है कि जब सुविधाएं गांव तक पहुंचती हैं, किसान मजबूत होता है और समाज मिलकर आगे बढ़ता है, तब विकास केवल योजनाओं में नहीं बल्कि लोगों के जीवन में दिखाई देता है।

संगठन में महिला नेतृत्व की मिसाल बनीं कुसुम शर्मा: बालोद जिले में भाजपा मंडल अध्यक्ष के रूप में बनाई अलग पहचान

संगठन में महिला नेतृत्व की मिसाल बनीं कुसुम शर्मा: बालोद जिले में भाजपा मंडल अध्यक्ष के रूप में बनाई अलग पहचान

बालोद/डौंडीलोहारा ✍**दर्शन बालोद**✍

राजनीति और संगठनात्मक कार्यों में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है और इसी दिशा में डौण्डीलोहारा भाजपा मंडल अध्यक्ष कुसुम शर्मा एक प्रेरक उदाहरण बनकर उभरी हैं। विशेष बात यह है कि पूरे बालोद जिले के भाजपा मंडलों में वर्तमान समय में वे एकमात्र महिला मंडल अध्यक्ष हैं, जिन्होंने अपने नेतृत्व, सक्रियता और संगठन क्षमता से अलग पहचान बनाई है। कुसुम शर्मा के नेतृत्व में डौण्डीलोहारा मंडल में संगठनात्मक गतिविधियों को गति मिली है। मंडल स्तर पर कार्यकर्ताओं के साथ नियमित संवाद, बूथ स्तर तक संपर्क और विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूती देने का प्रयास किया गया है।

महिला नेतृत्व को मिला नया मंच

राजनीति में अक्सर नेतृत्व की भूमिका पुरुषों के बीच अधिक दिखाई देती रही है, लेकिन कुसुम शर्मा ने यह साबित किया है कि अवसर और जिम्मेदारी मिलने पर महिलाएं भी संगठन को प्रभावी दिशा दे सकती हैं। उनके नेतृत्व को महिला कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणादायी माना जा रहा है।

कार्यकर्ताओं को साथ लेकर आगे बढ़ने की कार्यशैली

स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं का कहना है कि मंडल अध्यक्ष के रूप में कुसुम शर्मा ने समन्वय और संवाद की शैली को प्राथमिकता दी है। विभिन्न अभियानों, संगठनात्मक बैठकों और जनसंपर्क कार्यक्रमों के माध्यम से मंडल स्तर पर सक्रियता बनाए रखने का प्रयास किया गया है।

संगठन की मजबूती को बनाया प्राथमिकता

डौण्डीलोहारा क्षेत्र में संगठन विस्तार, कार्यकर्ताओं की सहभागिता और जनसंपर्क को मजबूत करने की दिशा में निरंतर काम किया जा रहा है। महिला नेतृत्व के साथ संगठन को नई ऊर्जा और सकारात्मक संदेश देने का प्रयास भी देखने को मिला है।राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से कुसुम शर्मा आज उन महिलाओं के लिए प्रेरणा बन रही हैं जो नेतृत्व की भूमिका निभाकर समाज और संगठन में अपनी पहचान बनाना चाहती हैं।

जब बालोद में दिखी दुनिया की सबसे छोटी गाय! कृत्रिम गर्भाधान से जन्मी पुंगनूर नस्ल बनी आकर्षण का केंद्र, घनश्याम यदु के प्रयासों की चर्चा

बालोद/गुंडरदेही ✍दर्शन बालोद✍

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में पहली बार दुनिया की सबसे छोटी और दुर्लभ मानी जाने वाली पुंगनूर नस्ल की गाय का सफल उत्पादन होने से पशुपालकों और पशु विशेषज्ञों के बीच उत्साह का माहौल है। आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध इस नस्ल को कृत्रिम गर्भाधान तकनीक के माध्यम से जिले में जन्म दिलाया गया है, जिसे राज्य में अपनी तरह का पहला मामला बताया जा रहा है।

प्रदर्शनी में बनी आकर्षण का केंद्र

पिछले वर्ष भरदाकला में आयोजित पशु मेले में ग्राम पैरी निवासी गौरव माहेश्वरी ने इस गाय की प्रदर्शनी लगाई थी। अपने छोटे कद, आकर्षक स्वरूप और दुर्लभता के कारण यह गाय मेले में लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी रही। पशुपालकों ने बड़ी संख्या में इस नस्ल के बारे में जानकारी हासिल की।

अधिकारियों के मार्गदर्शन में घनश्याम यदु के प्रयासों से मिली सफलता

पशु चिकित्सा विभाग के उपसंचालक डीके सिहारे के निर्देशन और पशु चिकित्सक डॉ एसके नायक के मार्गदर्शन में खेरूद निवासी कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता घनश्याम यदु के प्रयासों से बालोद जिले में पहली बार पुंगनूर नस्ल की गाय का जन्म संभव हो सका। अब तक कृत्रिम गर्भाधान के जरिए इस नस्ल के आठ बछड़ों का जन्म हो चुका है। उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि से जिले के पशुपालकों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खुले हैं।

क्या है पुंगनूर गाय की खासियत?

पुंगनूर गाय का नाम आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के पुंगनूर क्षेत्र के नाम पर रखा गया है। यह दुनिया की सबसे छोटी देसी गायों में गिनी जाती है।

मुख्य विशेषताएं:

- **ऊंचाई लगभग 97 से 107 सेंटीमीटर**
- **वजन 170 से 240 किलोग्राम**
- **दूध उत्पादन 1 से 2 किलोग्राम प्रतिदिन**
- **दूध में 8 प्रतिशत तक वसा (फैट) पाया जाता है**
- **शुष्क और कठिन वातावरण में भी आसानी से रह सकती है**
- **उम्र लगभग 15 से 25 वर्ष तक होती है**

खत्म होने की कगार से वापसी की कहानी

डॉ. एस.के. नायक ने बताया कि कुछ वर्षों पहले यह नस्ल विलुप्ति के कगार पर पहुंच गई थी। वर्ष 1997 में इसकी केवल 21 गायों की पहचान की गई थी। लेकिन राज्य और केंद्र सरकार के संरक्षण प्रयासों के चलते वर्ष 2019 की पशुधन गणना में इनकी संख्या बढ़कर 13,275 तक पहुंच गई।

दूध ही नहीं, गोबर और गोमूत्र भी कीमती

पुंगनूर गाय का दूध कम मात्रा में मिलता है, लेकिन इसमें वसा और पोषक तत्व अधिक होने के कारण इसकी मांग काफी रहती है। डेयरी उत्पादों के लिए यह दूध अत्यंत उपयोगी माना जाता है। इसके गोमूत्र में एंटी-बैक्टी-रियल गुण पाए जाते हैं और आंध्र प्रदेश के किसान इसका उपयोग जैविक खेती में करते हैं। गोबर और गोमूत्र दोनों का बाजार में अच्छा मूल्य मिलता है।

तिरुपति बालाजी से भी जुड़ा है विशेष संबंध

जानकारों के अनुसार पुंगनूर गाय के दूध से बने मावे का उपयोग वर्षों से तिरुपति बालाजी मंदिर के प्रसिद्ध लड्डू तैयार करने में किया जाता रहा है। यही कारण है कि इस नस्ल का धार्मिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से विशेष महत्व माना जाता है।

बालोद के पशुपालकों के लिए नई उम्मीद

कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता घनश्याम यदु के प्रयासों से बालोद जिले सहित छत्तीसगढ़ के पशुपालकों को इस दुर्लभ नस्ल से परिचित होने का अवसर मिला है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इस नस्ल का संवर्धन सफलतापूर्वक किया गया तो भविष्य में यह पशुपालकों के लिए अतिरिक्त आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन सकती है। बालोद जिले में पुंगनूर गाय का सफल उत्पादन न केवल पशुपालन क्षेत्र की बड़ी उपलब्धि है, बल्कि आधुनिक कृत्रिम गर्भाधान तकनीक की सफलता का भी उत्कृष्ट उदाहरण माना जा रहा है।

हिंदुत्व और सामाजिक चेतना को मिलेगा नया आयाम बालोद में हिंदू सेना की कार्यकारिणी घोषित

बोधन भट्ट बने प्रदेश कोषाध्यक्ष, पद्मिनी साहू को मिली जिला महामंत्री की जिम्मेदारी

बालोद ✍दर्शन बालोद✍

हिंदू संस्कृति, सामाजिक जागरूकता एवं संगठन विस्तार के उद्देश्य से हिंदू सेना द्वारा बालोद जिले की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता एवं प्रदेश अध्यक्ष हेमंत वर्मा की अनुशंसा पर प्रदेश महामंत्री निलेश श्रीवास्तव द्वारा जिला कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इस अवसर पर बालोद स्थित कुर्मी भवन में जिला स्तरीय बैठक एवं संगठन विस्तार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश महामंत्री निलेश श्रीवास्तव एवं जिला अध्यक्ष नंदा पसीने की उपस्थिति में विभिन्न पदाधिकारियों को नई जिम्मेदारियां सौंपी गईं। संगठन के विस्तार और समाजहित के संकल्प के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

संगठन में मिली नई जिम्मेदारियां

बैठक के दौरान वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी बोधन भट्ट को हिंदू सेना का प्रदेश कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। वहीं पद्मिनी साहू को बालोद जिला महामंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके अलावा ममता पटेल जिला उपाध्यक्ष, वर्षा दुबे संगठन मंत्री,दुर्गा जोशी सचिव, ज्योति पटेल जिला कोषाध्यक्ष सहित अन्य पदाधिकारियों को भी दायित्व प्रदान किए गए। नवनियुक्त पदाधिकारियों का पुष्पमाला एवं भगवा गमछा पहनाकर सम्मान किया गया तथा संगठन के उद्देश्यों को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया।

हिंदू संस्कृति के संरक्षण और सामाजिक जागरूकता पर दिया गया जोर

कार्यक्रम के दौरान प्रदेश महामंत्री निलेश श्रीवास्तव ने मंच संचालन करते हुए संगठन की भूमिका और उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदू सेना केवल संगठन विस्तार का माध्यम नहीं बल्कि समाज में सांस्कृतिक चेतना, सेवा भावना और राष्ट्रीय मूल्यों को मजबूत करने का प्रयास है। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा—"हिंदू संस्कृति हमारी पहचान और विरासत है। आने वाली पीढ़ियों तक हमारी परंपराएं, संस्कार और सामाजिक मूल्यों को पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। संगठन का उद्देश्य समाज को जोड़ना, जागरूक करना और सेवा कार्यों के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन लाना है।"उन्होंने युवाओं एवं महिलाओं की भागीदारी को मजबूत बनाने पर भी जोर दिया और कहा कि समाज की उन्नति सामूहिक सहभागिता से ही संभव है।

संगठन को समाज के बीच सक्रिय रखने का आह्वान

कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार उत्तम साहू ने आभार प्रदर्शन करते हुए सभी अतिथियों, पदाधिकारियों एवं उपस्थित जनों का धन्यवाद ज्ञापित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा— "संगठन तभी मजबूत होता है जब उसके कार्यकर्ता समाज के बीच रहकर लोगों की समस्याओं को समझें और समाधान की दिशा में काम करें। हमें सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण और जनसेवा को प्राथमिकता देते हुए आगे बढ़ना होगा।" उन्होंने नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए संगठन की जिम्मेदारियों को सक्रियता से निभाने का आह्वान किया।

बड़ी संख्या में उपस्थित रहे पदाधिकारी एवं समाजजन

कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार उत्तम साहू, उदय साहू, दर्शन बालोद के प्रधान संपादक दीपक यादव, विमल विश्वकर्मा, देवेंद्र साहू (इंजीनियर), श्वेता राजपूत, पुष्पा शांडिल्य, डिलेश्वरी साहू, सुशीला गरिया, मीनाक्षी सोनकर, निर्मला कोसमा, सकुन बाई, किसन बाई, भोजेश्वरी साहू, श्यामा बाई साहू सहित बड़ी संख्या में संगठन के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।कार्यक्रम का समापन हिंदू संस्कृति के संरक्षण, सामाजिक एकजुटता और सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने के संकल्प के साथ किया गया।

राजमाता झमीत कुंवर की शुरू की गई परंपरा आज भी जीवंत

नगर पंचायत अध्यक्ष लाल निवेंद्र सिंह टेकाम के संरक्षण में सहेजी जा रही सांस्कृतिक विरासत

रथ दूज पर डौंडी लोहारा में फिर गूंजेंगे भगवान जगनथ के जयकारे, ऐतिहासिक राम मंदिर से निकलेगी भव्य रथ यात्रा

डौंडी लोहारा ✍दर्शन बालोद✍

बालोद जिले के डौंडी लोहारा नगर की पहचान बन चुकी ऐतिहासिक रथ यात्रा एक बार फिर रथ दूज के पावन अवसर पर नगरवासियों को आस्था और भक्ति के रंग में सराबोर करने जा रही है। राज परिवार के ऐतिहासिक राम मंदिर से निकलने वाली यह भव्य रथ यात्रा वर्षों से नगर की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का प्रतीक बनी हुई है। इस गौरवशाली परंपरा की नींव वर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष लाल निवेंद्र सिंह टेकाम की परदादी एवं तत्कालीन राजमाता झमीत कुंवर ने रखी थी। उनके दूरदर्शी प्रयासों से स्थापित यह मंदिर आज भी नगर की आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। राजमाता द्वारा शुरू की गई परंपरा को राज परिवार और नगरवासी मिलकर पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ा रहे हैं।

1965 से निरंतर जारी है रथ यात्रा की परंपरा

मंदिर समिति के अनुसार वर्ष 1965 से रथ यात्रा का आयोजन निरंतर किया जा रहा है। होली के अवसर पर राधा-कृष्ण की भव्य शोभायात्रा और रथ दूज पर भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा नगर में विशेष आकर्षण का केंद्र रहती है। जैसे ही रथ नगर भ्रमण के लिए निकलता है, पूरा शहर ₹जय जगन्नाथ₹ के उद्घोष से गूंज उठता है। भक्ति गीतों, ढोल-मंजीरों, नगाड़ों और पारंपरिक फाग की स्वर लहरियों के बीच श्रद्धालु नाचते-गाते रथ के साथ चलते हैं। नगर के विभिन्न मार्गों से गुजरती यह यात्रा सामाजिक समरसता, भाईचारे और सांस्कृतिक एकता का संदेश देती है।

लाल निवेंद्र सिंह टेकाम निभा रहे

विरासत को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी

नगर पंचायत अध्यक्ष लाल निवेंद्र सिंह टेकाम न केवल राज परिवार की इस ऐतिहासिक धरोहर से जुड़े हुए हैं, बल्कि इसके संरक्षण और संवर्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनके मार्गदर्शन और सहयोग से मंदिर में होने वाले धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों की परंपरा निरंतर सशक्त हो रही है। नगरवासियों का मानना है कि राजमाता झमीत कुंवर द्वारा शुरू की गई इस विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने में उनका योगदान सराहनीय है।

सफेद संगमरमर की दुर्लभ मूर्तियां हैं विशेष आकर्षण

मंदिर में स्थापित सफेद संगमरमर की भव्य मूर्तियां श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। राम दरबार में भगवान राम, माता सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न एवं हनुमान जी विराजमान हैं। बताया जाता है कि वर्ष 1965 में तैयार किए गए मूर्तियों के दो सेटों में से एक मध्यप्रदेश के ग्वालियर स्थित मंदिर में तथा दूसरा डौंडी लोहारा के इस ऐतिहासिक मंदिर में स्थापित किया गया था।

सालभर होते हैं धार्मिक आयोजन

यह मंदिर केवल रथ यात्रा तक सीमित नहीं है। यहां रामनवमी, जन्माष्टमी, होली, रथ दूज सहित अनेक धार्मिक पर्वों पर विशेष आयोजन होते हैं। प्रत्येक आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होकर धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को आगे बढ़ाते हैं।

नगर की सांस्कृतिक पहचान बनी रथ यात्रा

डौंडी लोहारा की रथ यात्रा आज केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि नगर की सांस्कृतिक पहचान और गौरव का प्रतीक बन चुकी है। वर्षों पुरानी यह परंपरा नई पीढ़ी में भी उतनी ही लोकप्रिय है। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ इसमें सहभागी बनते हैं। रथ दूज के अवसर पर जब भगवान जगन्नाथ का रथ नगर की गलियों से गुजरता है और जयकारों से पूरा वातावरण गुंजायमान होता है, तब डौंडी लोहारा की यह ऐतिहासिक परंपरा अपनी जीवंतता और भव्यता का अद्भुत परिचय देती है।

व्हाट्सएप ग्रुप बना सेवा और सहयोग की मिसाल: 900+ सदस्यों ने जरूरतमंदों तक पहुंचाई 4.25 लाख से अधिक की मदद

बालोद/छत्तीसगढ़। समाज में सेवा, सहयोग और मानवीय संवेदनाओं का प्रेरणा-दायक उदाहरण बन चुका सामाजिक आर्थिक सहयोग ग्रुप – यादव ठेठवार समाज छत्तीसगढ़ आज जरूरतमंद परिवारों के लिए मजबूत सहारा बनकर उभरा है। शिक्षक नरोत्तम यदु की पहल से शुरू हुआ यह अभियान अब एक बड़े जनसहयोग आंदोलन का रूप ले चुका है, जिसमें वर्तमान में 900 से अधिक सदस्य व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से जुड़े हुए हैं और अपनी क्षमता अनुसार नियमित सहयोग कर रहे हैं। इस अभियान की शुरुआत एक साधारण सोच के साथ हुई थी—समाज के जरूरतमंद लोगों तक छोटी-छोटी सहायता पहुंचाना। सदस्यों को स्वेच्छा से 50 से 100 रुपये या अपनी क्षमता अनुसार योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया। समय के साथ यह पहल लगातार मजबूत होती गई और आज कई परिवारों के लिए संकट की घड़ी में उम्मीद बन गई है।ग्रुप की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी पारदर्शी एवं जिम्मेदार कार्यप्रणाली है। किसी भी जरूरतमंद को सहायता देने से पहले उसकी वास्तविक स्थिति, दस्तावेज और आवश्यकता का सत्यापन किया जाता है। पुष्टि होने के बाद ही समाज से सहयोग की अपील की जाती है, जिससे सहायता सही व्यक्ति तक पहुंच सके। 05 जनवरी 2024 से अब तक ग्रुप द्वारा लगभग 4,25,483 की सहायता राशि जरूरतमंदों तक पहुंचाई जा चुकी है। यह सहायता गंभीर बीमारी, सड़क दुर्घटना, शिक्षा, आर्थिक संकट, उपचार एवं सामाजिक आवश्यकताओं से जूझ रहे अनेक परिवारों को दी गई। कई लोगों को समय पर आर्थिक सहयोग मिलने से उपचार, शिक्षा और जरूरी कार्य पूरे हो सके। ग्रुप सदस्यों का कहना है कि यह पहल साबित करती है कि यदि समाज संगठित होकर आगे आए तो छोटे-छोटे योगदान भी किसी के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। तकनीक और सामाजिक संवेदनाओं के इस अनूठे संगम ने सेवा को जनआंदोलन का रूप दे दिया है।

स्वस्थ शरीर, शांत मन
योग से जीवन धन

21 जून
अंतर्राष्ट्रीय
योग दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

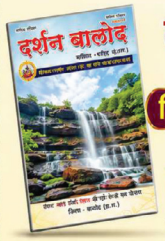

दर्शन बालोद
मासिक पत्रिका के
द्वितीय अंक प्रकाशन पर
संपादक
माधुरी दीपक यादव जी
को बधाई

शुभेच्छु :
पीलूराम साहू
शिक्षक
मिडिल स्कूल बड़गांव (डौंडीलोहारा)

स्वस्थ शरीर, शांत मन
योग से जीवन धन

21 जून
अंतर्राष्ट्रीय
योग दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

दर्शन बालोद
मासिक पत्रिका द्वारा
योग विशेषांक
प्रकाशन की हार्दिक
बधाई

शुभेच्छु :
धीरज शर्मा
- योगा एंड वेलनेस कोच (आयुष मंत्रालय)
- योगा वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर
- फ़ाउंडर ऑफ गुरु ग्रेस योगा एंड वेलनेस स्टूडियो
- सीनियर आर्ट ऑफ लिविंग फैकल्टिस

योग करें, निरोग रहें, खुशहाल रहें

स्वस्थ शरीर, शांत मन
योग से जीवन बने धन

21 जून
अंतर्राष्ट्रीय
योग दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

“ योग अपनाएं, निरोग रहें,
खुशहाल जीवन की ओर कदम बढ़ाएं। ”

दर्शन बालोद न्यूज
के द्वितीय अंक के
प्रकाशन पर
हार्दिक बधाई
एवं उज्जवल भविष्य की
शुभकामनाएं।

संपादक
माधुरी दीपक यादव जी
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

द्वितीय अंक

शुभेच्छु :
मधुमाला कौशल
नेशनल योगा ट्रेनर
प्राचार्य – हायर सेकेंडरी स्कूल सिकोसा (गुंडरदेही)

स्वस्थ शरीर, शांत मन
योग से जीवन धन

21 जून
अंतर्राष्ट्रीय
योग दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

दर्शन बालोद
मासिक पत्रिका द्वारा
योग विशेषांक
प्रकाशन पर हार्दिक
बधाई

शुभेच्छु :
बाला राम निषाद
प्रधानपाठक
शासकीय माध्यमिक शाला डढ़ारी
संकुल खुंदनी, विकासखंड गुरूर, जिला बालोद (छ.ग.)

HAPPY BIRTHDAY

भारतीय जनता पार्टी की
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
आदरणीय सरोज पांडे जी
को जन्मदिन की हार्दिक
बधाई एवं शुभकामनाएं।
ईश्वर से प्रार्थना है कि
आपको उत्तम स्वास्थ्य,
दीर्घायु एवं सुखमय
जीवन प्रदान करें।
आपके नेतृत्व, समर्पण
और राष्ट्रसेवा के संकल्प
से समाज एवं संगठन
को निरंतर नई ऊर्जा और
प्रेरणा मिलती रहे।

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

कुसुम शर्मा
अध्यक्ष भाजपा मण्डल
डौंडीलोहारा